# قرآن مجید

## लफ़्ज़ी तरजुमा

eParah

# اَمَّنْ خَلَقَ

## पारा - 20

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مِّنَ السَّمَآءِ | لَكُمْ | وَاَنْزَلَ | وَالْاَرْضَ | السَّمٰوٰتِ | خَلَقَ | اَمَّنْ |
| आसमान से | तुम्हारे लिए | और उसने उतारा | और ज़मीन को | आसमानों | पैदा किया | या कौन है जिसने |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| لَكُمْ | كَانَ | مَا | ذَاتَ بَهْجَةٍ ج | حَدَآئِقَ | بِهٖ | فَاَنْۢبَتْنَا | مَآءً ج |
| तुम्हारे लिए | था | ना | रौनक़ वाले | बाग़ात | साथ उसके | फिर उगाए हमने | पानी |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| قَوْمٌ | هُمْ | بَلْ | اللّٰهِ ط | مَّعَ | ءَاِلٰهٌ | شَجَرَهَا ط | تُنْۢبِتُوْا | اَنْ |
| ऐसे लोग हैं | वो | बल्कि | अल्लाह के | साथ | क्या है कोई इलाह | दरख़्त उनके | तुम उगा सको | कि |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| خِلٰلَهَآ | وَّجَعَلَ | قَرَارًا | الْاَرْضَ | جَعَلَ | اَمَّنْ | يَّعْدِلُوْنَ ﴿60﴾ ط |
| दर्मियान उसके | और उसने बनाया | जाए क़रार | ज़मीन को | बनाया | या कौन है जिसने | जो (अल्लाह के) बराबर क़रार देते हैं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْبَحْرَيْنِ | بَيْنَ | وَجَعَلَ | رَوَاسِيَ | لَهَا | وَّجَعَلَ | اَنْهٰرًا |
| दो समुन्दरों के | दर्मियान | और उसने बनाया | पहाड़ों को | उसके लिए | और उसने बनाया | नहरों को |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اَمَّنْ | لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿61﴾ ط | اَكْثَرُهُمْ | بَلْ | اللّٰهِ ط | مَّعَ | ءَاِلٰهٌ | حَاجِزًا ط |
| या कौन है जो | नहीं वो इल्म रखते | अक्सर उनके | बल्कि | अल्लाह के | साथ | क्या है कोई इलाह | एक पर्दा |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَيَجْعَلُكُمْ | السُّوْٓءَ | وَيَكْشِفُ | دَعَاهُ | اِذَا | الْمُضْطَرَّ | يُّجِيْبُ |
| और वो बनाता है तुम्हें | तकलीफ़ | और वो दूर करता है | वो दुआ करता है उससे | जब | बेक़रार की | दुआ क़ुबूल करता है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| تَذَكَّرُوْنَ ﴿62﴾ ط | قَلِيْلًا مَّا | اللّٰهِ ط | مَّعَ | ءَاِلٰهٌ | الْاَرْضِ ط | خُلَفَآءَ |
| तुम नसीहत पकड़ते हो | कितना कम | अल्लाह के | साथ | क्या है कोई इलाह | ज़मीन के | जानशीन |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| يُّرْسِلُ | وَمَنْ | وَالْبَحْرِ | الْبَرِّ | فِيْ ظُلُمٰتِ | يَّهْدِيْكُمْ | اَمَّنْ |
| भेजता है | और कौन है जो | और समुन्दर के | ख़ुश्की के | अंधेरों में | राह दिखाता है तुम्हें | या कौन है जो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اللّٰهِ ط | مَّعَ | ءَاِلٰهٌ | رَحْمَتِهٖ ط | بَيْنَ يَدَيْ | بُشْرًا | الرِّيٰحَ |
| अल्लाह के | साथ | क्या है कोई इलाह | अपनी रहमत के | आगे-आगे | बतौर ख़ुशख़बरी | हवाओं को |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| تَعٰلَى | اللّٰهُ | عَمَّا | يُشْرِكُوْنَ ﴿63﴾ ط | اَمَّنْ | يَّبْدَؤُا | الْخَلْقَ | ثُمَّ |
| बुलंदतर है | अल्लाह | उससे जो | वो शरीक ठहराते है | या कौन है जो | इब्तिदा करता है | तख़लीक़ की | फिर |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| يُعِيْدُهٗ | وَمَنْ | يَّرْزُقُكُمْ | مِّنَ السَّمَآءِ | وَالْاَرْضِ ط | ءَاِلٰهٌ |
| वो एआदा करेगा उसका | और कौन है जो | रिज़्क़ देता है तुम्हें | आसमान से | और ज़मीन से | क्या है कोई इलाह |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مَّعَ | اللّٰهِ ط | قُلْ | هَاتُوْا | بُرْهَانَكُمْ | اِنْ | كُنْتُمْ | صٰدِقِيْنَ ﴿64﴾ |
| साथ | अल्लाह के | कह दीजिए | लाओ | दलील अपनी | अगर | हो तुम | सच्चे |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| قُلْ | لَّا يَعْلَمُ | مَنْ | فِي السَّمٰوٰتِ | وَالْاَرْضِ | الْغَيْبَ | اِلَّا | اللّٰهُ ط |
| कह दीजिए | नहीं जानता | जो कोई | आसमानों में | और ज़मीन में है | ग़ैब को | सिवाए | अल्लाह के |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَمَا | يَشْعُرُوْنَ | اَيَّانَ | يُبْعَثُوْنَ ﴿65﴾ | بَلِ | ادّٰرَكَ | عِلْمُهُمْ |
| और नहीं | वो शऊर रखते | कि कब | वो उठाए जाऐंगे | बल्कि | गुम हो गया | इल्म उनका |

ع 5 8 1

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| فِي الْاٰخِرَةِ قف | بَلْ | هُمْ | فِيْ شَكٍّ | مِّنْهَا قف | بَلْ | هُمْ | مِّنْهَا | عَمُوْنَ ﴿66﴾ ع |
| आख़िरत के बारे में | बल्कि | वो | शक में हैं | उससे | बल्कि | वो | उससे | अंधे हैं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَقَالَ | الَّذِيْنَ | كَفَرُوْٓا | ءَاِذَا | كُنَّا | تُرٰبًا | وَّاٰبَآؤُنَآ |
| और कहा | उन लोगों ने जिन्होंने | कुफ़्र किया | क्या जब | हो जाऐंगे हम | मिट्टी | और आबा ओ अजदाद हमारे |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَئِنَّا | لَمُخْرَجُوْنَ ﴿67﴾ | لَقَدْ | وُعِدْنَا | هٰذَا | نَحْنُ | وَاٰبَآؤُنَا |
| क्या यक़ीनन हम | ज़रूर निकाले जाऐंगे | और अलबत्ता तहक़ीक़ | वादा किए गए हम | उसका | हम | और आबा ओ अजदाद हमारे |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مِنْ قَبْلُ لا | اِنْ | هٰذَآ | اِلَّآ | اَسَاطِيْرُ | الْاَوَّلِيْنَ ﴿68﴾ | قُلْ | سِيْرُوْا |
| इससे क़ब्ल | नहीं | ये | मगर | कहानियां हैं | पहलों की | कह दीजिए | चलो फिरो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فِي الْاَرْضِ | فَانْظُرُوْا | كَيْفَ | كَانَ | عَاقِبَةُ | الْمُجْرِمِيْنَ ﴿69﴾ | وَلَا |
| ज़मीन में | फिर देखो | किस तरह | हुआ | अंजाम | मुजरिमों का | और ना |

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| يَمْكُرُوْنَ ⑦⓪ | مِّمَّا | فِيْ ضَيْقٍ | تَكُنْ | وَلَا | عَلَيْهِمْ | تَحْزَنْ |
| वो चालें चल रहे हैं | उससे जो | तंगी में | आप हों | और ना | उन पर | आप ग़म कीजिए |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| قُلْ | صٰدِقِيْنَ (71) | كُنْتُمْ | اِنْ | الْوَعْدُ | هٰذَا | مَتٰى | وَيَقُوْلُوْنَ |
| कह दीजिए | सच्चे | हो तुम | अगर | वादा | ये | कब होगा | और वो कहते हैं |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| تَسْتَعْجِلُوْنَ (72) | الَّذِيْ | بَعْضُ | لَكُمْ | رَدِفَ | يَّكُوْنَ | اَنْ | عَسٰٓى |
| तुम जल्दी मांगते हो | वो जो | बाज़/कुछ हिस्सा | तुम्हारे | पीछे आ लगे | हो वो | कि | उम्मीद है |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| اَكْثَرَهُمْ | وَلٰكِنَّ | عَلَى النَّاسِ | لَذُوْ فَضْلٍ | رَبَّكَ | وَاِنَّ |
| अक्सर उनके | और लेकिन | लोगों पर | अलबत्ता फ़ज़्ल वाला है | रब आपका | और बेशक |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| صُدُوْرُهُمْ | تُكِنُّ | مَا | لَيَعْلَمُ | رَبَّكَ | وَاِنَّ | لَا يَشْكُرُوْنَ (73) |
| सीने उनके | छुपाते हैं | जो कुछ | अलबत्ता वो जानता है | रब आपका | और बेशक | नहीं वो शुक्र करते |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اِلَّا | وَالْاَرْضِ | فِي السَّمَآءِ | مِنْ غَآئِبَةٍ | وَمَا | يُعْلِنُوْنَ (74) | وَمَا |
| मगर | और ज़मीन में | आसमान में | कोई ग़ायब होने वाली | और नहीं | वो ज़ाहिर करते हैं | और जो कुछ |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| عَلٰى بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ | يَقُصُّ | الْقُرْاٰنَ | هٰذَا | اِنَّ | مُّبِيْنٍ (75) | فِيْ كِتٰبٍ |
| बनी इस्राईल पर | बयान करता है | क़ुरआन | ये | बेशक | वाज़ेह | एक किताब में है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَهُدًى | وَاِنَّهٗ | يَخْتَلِفُوْنَ (76) | فِيْهِ | هُمْ | الَّذِيْ | اَكْثَرَ |
| अलबत्ता हिदायत है | और बेशक वो | वो इख़्तिलाफ़ करते हैं | उनमें | वो | वो जो | अक्सर (बातें) |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بِحُكْمِهٖ ج | بَيْنَهُمْ | يَقْضِيْ | رَبَّكَ | اِنَّ | لِّلْمُؤْمِنِيْنَ (77) | وَّرَحْمَةٌ |
| अपने हुक्म से | दर्मियान उनके | वो फ़ैसला करेगा | रब आपका | बेशक | ईमान लाने वालों के लिए | और रहमत है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| عَلَى الْحَقِّ | اِنَّكَ | عَلَى اللّٰهِ ط | فَتَوَكَّلْ | الْعَلِيْمُ (78) ج لا | الْعَزِيْزُ | وَهُوَ |
| हक़ पर हैं | बेशक आप | अल्लाह पर | पस तवक्कुल कीजिए | ख़ूब इल्म वाला है | बहुत ज़बरदस्त है | और वो |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الصُّمَّ | تُسْمِعُ | وَلَا | الْمَوْتٰى | لَا تُسْمِعُ | اِنَّكَ | الْمُبِيْنِ (79) |
| बहरों को | आप सुना सकते | और नहीं | मुर्दों को | नहीं आप सुना सकते | बेशक आप | वाज़ेह |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| الْعُمْىِ | بِهٰدِى | اَنْتَ | وَمَآ | مُدْبِرِيْنَ (80) | وَلَّوْا | اِذَا | الدُّعَآءَ |
| अंधों को | हिदायत देने वाले | आप | और नहीं | पीठ फेर कर | वो फिर जाऐं | जब | पुकार |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| فَهُمْ | بِاٰيٰتِنَا | يُّؤْمِنُ | مَنْ | اِلَّا | تُسْمِعُ | اِنْ | عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ؕ |
| फिर वो | हमारी आयात पर | ईमान लाते हैं | उनको जो | मगर | आप सुना सकते | नहीं | उनकी गुमराही से |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَهُمْ | اَخْرَجْنَا | عَلَيْهِمْ | الْقَوْلُ | وَقَعَ | وَاِذَا | مُّسْلِمُوْنَ (81) |
| उनके लिए | निकालेंगे हम | उन पर | बात | वाक़ेअ हो जाएगी | और जब | फ़रमांबरदार हैं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بِاٰيٰتِنَا | كَانُوْا | النَّاسَ | اَنَّ | تُكَلِّمُهُمْ ۙ | مِّنَ الْاَرْضِ | دَآبَّةً |
| हमारी आयात पर | थे वो | लोग | कि बेशक | जो कलाम करेगा उनसे | ज़मीन से | एक जानवर |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مِّمَّنْ | فَوْجًا | مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ | نَحْشُرُ | وَيَوْمَ | لَا يُوْقِنُوْنَ (82) ع |
| उनमें से जो | एक फ़ौज को | हर उम्मत में से | हम इकट्ठा करेंगे | और जिस दिन | ना वो यक़ीन रखते |

ع 6 16 2

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| جَآءُوْ | اِذَا | حَتّٰى | يُوْزَعُوْنَ (83) | فَهُمْ | بِاٰيٰتِنَا | يُّكَذِّبُ |
| वो आ जाऐंगे | जब | यहां तक कि | वो गिरोहों में तक़सीम किए जाऐंगे | तो वो | हमारी आयात को | झुठलाते हैं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| عِلْمًا | بِهَا | تُحِيْطُوْا | وَلَمْ | بِاٰيٰتِىْ | اَكَذَّبْتُمْ | قَالَ |
| इल्म के ऐतबार से | उनका | तुमने एहाता किया था | हालांकि नहीं | मेरी आयात को | क्या झुठलाया तुमने | वो फरमाएगा |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بِمَا | عَلَيْهِمْ | الْقَوْلُ | وَوَقَعَ | تَعْمَلُوْنَ (84) | كُنْتُمْ | اَمَّاذَا |
| बवजह उसके जो | उन पर | बात | और वाक़ेअ हो जाएगी | तुम अमल करते | थे तुम | या क्या कुछ |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| الَّيْلَ | جَعَلْنَا | اَنَّا | يَرَوْا | اَلَمْ | لَا يَنْطِقُوْنَ (85) | فَهُمْ | ظَلَمُوْا |
| रात को | बनाया हमने | बेशक हम | उन्होंने देखा | क्या नहीं | ना वो बोल सकेंगे | तो वो | उन्होंने ज़ुल्म किया |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| لَاٰيٰتٍ | فِىْ ذٰلِكَ | اِنَّ | مُبْصِرًا ؕ | وَالنَّهَارَ | فِيْهِ | لِيَسْكُنُوْا |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अलबत्ता निशानियां हैं | इसमें | बेशक | रोशन | और दिन को | उसमें | ताकि वो सुकून पाएं |

| مَنْ | فَفَزِعَ | فِى الصُّوْرِ | يُنْفَخُ | وَيَوْمَ | يُّؤْمِنُوْنَ ﴿86﴾ | لِّقَوْمٍ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जो कोई | तो घबरा जाएगा | सूर में | फूंका जाएगा | और जिस दिन | जो ईमान लाते हैं | उन लोगों के लिए |

| وَكُلٌّ | اللّٰهُ ؕ | شَآءَ | مَنْ | اِلَّا | فِى الْاَرْضِ | وَمَنْ | فِى السَّمٰوٰتِ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और सबके सब | अल्लाह | चाहे | जिसे | मगर | ज़मीन में है | और जो कोई | आसमानों में है |

| وَّهِىَ | جَامِدَةً | تَحْسَبُهَا | الْجِبَالَ | وَتَرَى | دٰخِرِيْنَ ﴿87﴾ | اَتَوْهُ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| हालांकि वो | जामिद | आप समझते हैं उन्हें | पहाड़ों को | और आप देखते हैं | ज़लील होकर | आऐंगे उसके पास |

| شَىْءٍ ؕ | كُلَّ | اَتْقَنَ | الَّذِىْٓ | اللّٰهِ | صُنْعَ | السَّحَابِ ؕ | مَرَّ | تَمُرُّ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चीज़ को | हर | मज़बूत बनाया | वो जिसने | अल्लाह की | कारीगरी/सनअत है | बादलों का | चलना | वो चलते हैं |

| بِالْحَسَنَةِ | جَآءَ | مَنْ | تَفْعَلُوْنَ ﴿88﴾ | بِمَا | خَبِيْرٌۢ | اِنَّهٗ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| नेकी को | लाएगा | जो कोई | तुम करते हो | उसकी जो | ख़ूब ख़बर रखने वाला है | बेशक वो |

| وَمَنْ | اٰمِنُوْنَ ﴿89﴾ | يَّوْمَئِذٍ | مِّنْ فَزَعٍ | وَهُمْ | مِّنْهَا ج | خَيْرٌ | فَلَهٗ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| और जो कोई | अमन में होंगे | उस दिन | घबराहट से | और वो | उससे | बेहतर है | तो उसके लिए |

| تُجْزَوْنَ | هَلْ | فِى النَّارِ ؕ | وُجُوْهُهُمْ | فَكُبَّتْ | بِالسَّيِّئَةِ | جَآءَ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तुम बदला दिए जाओगे | नहीं | आग में | चेहरे उनके | तो औंधे डाले जाएंगे | बुराई को | लाएगा |

| اَعْبُدَ | اَنْ | اُمِرْتُ | اِنَّمَآ | تَعْمَلُوْنَ ﴿90﴾ | كُنْتُمْ | مَا | اِلَّا |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| मैं इबादत करूं | कि | हुक्म दिया गया है मुझे | बेशक | तुम अमल करते | थे तुम | उसका जो | मगर |

| شَىْءٍ ز | كُلُّ | وَلَهٗ | حَرَّمَهَا | الَّذِىْ | الْبَلْدَةِ | هٰذِهِ | رَبَّ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| चीज़ | हर | और उसी के लिए है | हराम ठहराया उसे | वो जिसने | शहर के | इस | रब की |

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَاُمِرْتُ | اَنْ | اَكُوْنَ | مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۙ (91) | وَاَنْ | اَتْلُوَا | الْقُرْاٰنَ ۚ |
| और हुक्म दिया गया है मुझे | कि | मैं हो जाऊं | फ़रमांबरदारों में से | और ये कि | मैं तिलावत करूं | क़ुरआन की |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| فَمَنِ | اهْتَدٰى | فَاِنَّمَا | يَهْتَدِىْ | لِنَفْسِهٖ ۚ | وَمَنْ | ضَلَّ | فَقُلْ |
| तो जो कोई | हिदायत पा गया | तो बेशक | वो हिदायत पाएगा | अपने नफ़्स के लिए | और जो कोई | भटका | तो कह दीजिए |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اِنَّمَآ | اَنَا | مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ (92) | وَقُلِ | الْحَمْدُ | لِلّٰهِ | سَيُرِيْكُمْ |
| बेशक | मैं तो | डराने वालों में से हूं | कह दीजिए | सब तारीफ़ | अल्लाह के लिए है | अनक़रीब वो दिखाएगा तुम्हें |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اٰيٰتِهٖ | فَتَعْرِفُوْنَهَا ؕ | وَمَا | رَبُّكَ | بِغَافِلٍ | عَمَّا | تَعْمَلُوْنَ (93) ع |
| अपनी निशानियां | तो तुम पहचान लोगे उन्हें | और नहीं | रब आपका | ग़ाफ़िल | उससे जो | तुम अमल करते हो |

ع 7 11 3

## اٰيَاتُهَا: 88 — 28 سُوْرَةُ الْقَصَصِ مَكِّيَّةٌ 49 — رُكُوْعَاتُهَا: 9

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| طٰسٓمّٓ (1) | تِلْكَ | اٰيٰتُ | الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ (2) | نَتْلُوْا | عَلَيْكَ |
| طٰسٓمّٓ | ये | आयात हैं | वाज़ेह किताब की | हम पढ़ते हैं | आप पर |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مِنْ نَّبَاِ | مُوْسٰى | وَفِرْعَوْنَ | بِالْحَقِّ | لِقَوْمٍ | يُّؤْمِنُوْنَ (3) | اِنَّ |
| कुछ ख़बर | मूसा की | और फ़िरऔन की | साथ हक़ के | उन लोगों के लिए | जो ईमान लाते हैं | बेशक |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فِرْعَوْنَ | عَلَا | فِى الْاَرْضِ | وَجَعَلَ | اَهْلَهَا | شِيَعًا | يَّسْتَضْعِفُ |
| फ़िरऔन ने | सरकशी की | ज़मीन में | और उसने कर दिया | उसके रहने वालों को | कई गिरोह | उसने कमज़ोर कर रखा था |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| طَآئِفَةً | مِّنْهُمْ | يُذَبِّحُ | اَبْنَآءَهُمْ | وَيَسْتَحْيٖ | نِسَآءَهُمْ ؕ | اِنَّهٗ |
| एक गिरोह को | उनमें से | वो ज़िबह करता था | उनके बेटों को | और वो ज़िंदा छोड़ देता था | उनकी औरतों को | बेशक वो |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| كَانَ | مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ (4) | وَنُرِيْدُ | اَنْ | نَّمُنَّ | عَلَى الَّذِيْنَ |
| था वो | फ़साद करने वालों में से | और हम चाहते थे | कि | हम एहसान करें | उन पर जो |

© AL-FURQAN INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| اسْتُضْعِفُوْا | فِي الْاَرْضِ | وَنَجْعَلَهُمْ | اَئِمَّةً | وَّنَجْعَلَهُمُ |
| कमज़ोर बना दिए गए थे | ज़मीन में | और हम बनाऐं उन्हें | इमाम/पेशवा | और हम बनाऐं उन्हें |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْوٰرِثِيْنَ ۙ﴿5﴾ | وَنُمَكِّنَ | لَهُمْ | فِي الْاَرْضِ | وَنُرِيَ | فِرْعَوْنَ | وَهَامٰنَ |
| वारिस | और हम इक़्तिदार बख़्शें | उन्हें | ज़मीन में | और हम दिखा दें | फ़िरऔन को | और हामान को |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَجُنُوْدَهُمَا | مِنْهُمْ | مَّا | كَانُوْا | يَحْذَرُوْنَ﴿6﴾ | وَاَوْحَيْنَآ | اِلٰٓى |
| और उन दोनों के लश्करों को | उनसे | (वो चीज़) जिससे | थे वो | वो डरते | और वही की हमने | तरफ़ |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اُمِّ مُوْسٰٓى | اَنْ | اَرْضِعِيْهِ ۚ | فَاِذَا | خِفْتِ | عَلَيْهِ | فَاَلْقِيْهِ | فِي الْيَمِّ |
| मूसा की मां के | कि | दूध पिलाओ उसे | फिर जब | ख़ौफ़ हो तुम्हें | उस पर | तो फिर डाल दो उसे | दरिया में |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَلَا | تَخَافِيْ | وَلَا | تَحْزَنِيْ ۚ | اِنَّا | رَآدُّوْهُ | اِلَيْكِ | وَجَاعِلُوْهُ |
| और ना | तुम डरो | और ना | तुम ग़म करो | बेशक हम | लौटा देने वाले हैं उसे | तरफ़ तेरे | और बनाने वाले हैं उसे |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ﴿7﴾ | فَالْتَقَطَهٗٓ | اٰلُ فِرْعَوْنَ | لِيَكُوْنَ | لَهُمْ | عَدُوًّا |
| रसूलों में से | पस उठा लिया उसे | आले फ़िरऔन ने | ताकि वो हो | उनके लिए | दुश्मन |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَّحَزَنًا ؕ | اِنَّ | فِرْعَوْنَ | وَهَامٰنَ | وَجُنُوْدَهُمَا | كَانُوْا | خٰطِـِٕيْنَ﴿8﴾ |
| और ग़म (का मोजिब) | बेशक | फ़िरऔन | और हामान | और उन दोनों के लश्कर | थे वो | ख़ताकार |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَقَالَتِ | امْرَاَتُ | فِرْعَوْنَ | قُرَّتُ | عَيْنٍ | لِّيْ | وَلَكَ ؕ |
| और कहने लगी | बीवी | फ़िरऔन की | ठंडक | आंखों की | मेरे लिए | और तेरे लिए |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| لَا تَقْتُلُوْهُ ۖ | عَسٰٓى | اَنْ | يَّنْفَعَنَآ | اَوْ | نَتَّخِذَهٗ | وَلَدًا | وَّهُمْ |
| ना तुम क़त्ल करो इसे | उम्मीद है | कि | वो नफ़ा देगा हमें | या | हम बना लेंगे इसे | बेटा | और वो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَا يَشْعُرُوْنَ﴿9﴾ | وَاَصْبَحَ | فُؤَادُ | اُمِّ مُوْسٰى | فٰرِغًا ؕ | اِنْ | كَادَتْ |
| नहीं वो शऊर रखते थे | और हो गया | दिल | मूसा की मां का | ख़ाली | बेशक | क़रीब था |

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَتُبْدِیْ | بِهٖ | لَوْ لَاۤ | اَنْ | رَّبَطْنَا | عَلٰی قَلْبِهَا | لِتَكُوْنَ |
| कि वो ज़ाहिर कर देती | उसे | अगर ना होता | ये कि | मज़बूत कर दिया था हमने | उसके दिल को | ताकि वो हो |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مِنَ الْمُؤْمِنِیْنَ ⑩ | وَ قَالَتْ | لِاُخْتِهٖ | قُصِّیْهِ ۫ | فَبَصُرَتْ | بِهٖ |
| ईमान लाने वालों में से | और वो कहने लगी | उसकी बहन से | पीछे जा उसके | फिर वो देखती रही | उसे |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| عَنْ جُنُبٍ | وَّ هُمْ | لَا یَشْعُرُوْنَ ⑪ لا | وَ حَرَّمْنَا | عَلَیْهِ | الْمَرَاضِعَ |
| दूर से | और वो | वो शऊर ना रखते थे | और हराम कर दीं हमने | उस पर | दूध पिलाने वालियां |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مِنْ قَبْلُ | فَقَالَتْ | هَلْ | اَدُلُّكُمْ | عَلٰۤی اَهْلِ بَیْتٍ | یَّكْفُلُوْنَهٗ |
| इससे पहले | तो वो कहने लगी | क्या | मैं बताऊं तुम्हें | ऐसे घर वाले | जो किफ़ालत करेंगे उसकी |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَكُمْ | وَ هُمْ | لَهٗ | نٰصِحُوْنَ ⑫ | فَرَدَدْنٰهُ | اِلٰۤی اُمِّهٖ | كَیْ |
| तुम्हारे लिए | और वो | उसके लिए | ख़ैरख़्वाह हों | तो लौटा दिया हमने उसे | तरफ़ उसकी मां के | ताकि |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| تَقَرَّ | عَیْنُهَا | وَ لَا | تَحْزَنَ | وَ لِتَعْلَمَ | اَنَّ | وَعْدَ | اللّٰهِ | حَقٌّ |
| ठंडी हों | आंखें उसकी | और ना | वो ग़मगीन हो | और ताकि वो जान ले | यक़ीनन | वादा | अल्लाह का | सच्चा है |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَ لٰكِنَّ | اَكْثَرَهُمْ | لَا یَعْلَمُوْنَ ⑬ ع | وَ لَمَّا | بَلَغَ | اَشُدَّهٗ | وَ اسْتَوٰۤی | ع 1 13 4 |
| और लेकिन | अक्सर उनके | नहीं वो जानते | और जब | वो पहुंचा | अपनी जवानी को | और वो तवाना हो गया | |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| اٰتَیْنٰهُ | حُكْمًا | وَّ عِلْمًا ؕ | وَ كَذٰلِكَ | نَجْزِی | الْمُحْسِنِیْنَ ⑭ |
| अता की हमने उसे | हिक्मत | और इल्म | और इसी तरह | हम बदला देते हैं | एहसान करने वालों को |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَ دَخَلَ | الْمَدِیْنَةَ | عَلٰی حِیْنِ غَفْلَةٍ | مِّنْ اَهْلِهَا | فَوَجَدَ | فِیْهَا |
| और वो दाख़िल हुआ | शहर में | ग़फ़लत के वक़्त | उसके रहने वालों की | तो उसने पाया | उसमें |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| رَجُلَیْنِ | یَقْتَتِلٰنِ ۚ | هٰذَا | مِنْ شِیْعَتِهٖ | وَ هٰذَا | مِنْ عَدُوِّهٖ ۚ |
| दो मर्दों को | वो दोनों लड़ रहे थे | ये | उसके गिरोह में से था | और ये (दूसरा) | उसके दुश्मनों में से था |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| فَاسْتَغَاثَهُ | الَّذِیْ | مِنْ شِیْعَتِهٖ | عَلَى الَّذِیْ | مِنْ عَدُوِّهٖ ۙ | فَوَكَزَهٗ |
| पस मदद तलब की उससे | उसने जो | उसके गिरोह में से था | उसके ख़िलाफ़ | जो उसके दुश्मनों में से था | तो घूंसा मारा उसे |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مُوْسٰى | فَقَضٰى | عَلَيْهِ ۫ | قَالَ | هٰذَا | مِنْ عَمَلِ | الشَّيْطٰنِ ؕ | اِنَّهٗ |
| मूसा ने | तो पूरी कर दी | उस पर (ज़िंदगी) | बोला | ये | काम में से है | शैतान के | यक़ीनन वो |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| عَدُوٌّ | مُّضِلٌّ | مُّبِيْنٌ ﴿15﴾ | قَالَ | رَبِّ | اِنِّیْ | ظَلَمْتُ | نَفْسِیْ |
| दुश्मन है | गुमराह करने वाला है | खुल्लम-खुल्ला | कहा | ऐ मेरे रब | बेशक मैं | ज़ुल्म किया मैंने | अपनी जान पर |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| فَاغْفِرْ لِیْ | فَغَفَرَ | لَهٗ ؕ | اِنَّهٗ | هُوَ | الْغَفُوْرُ | الرَّحِیْمُ ﴿16﴾ | قَالَ |
| पस बख़्श दे मुझे | तो उसने बख़्श दिया | उसे | बेशक वो | वो ही है | बहुत बख़्शने वाला | निहायत रहम करने वाला | कहा |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| رَبِّ | بِمَآ | اَنْعَمْتَ | عَلَیَّ | فَلَنْ | اَكُوْنَ | ظَهِیْرًا |
| ऐ मेरे रब | बवजह उसके जो | इनआम किया तूने | मुझ पर | तो हरगिज़ नहीं | मैं हूंगा | मददगार |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| لِّلْمُجْرِمِیْنَ ﴿17﴾ | فَاَصْبَحَ | فِی الْمَدِیْنَةِ | خَآئِفًا | یَّتَرَقَّبُ | فَاِذَا |
| मुजरिमों के लिए | तो उसने सुबह की | शहर में | डरते हुए | ख़ुफ़िया टोह लगाते हुए | फिर अचानक |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الَّذِی | اسْتَنْصَرَهٗ | بِالْاَمْسِ | یَسْتَصْرِخُهٗ ؕ | قَالَ | لَهٗ | مُوْسٰۤى |
| वो शख़्स | जिसने मदद मांगी थी उससे | कल | वो फरियाद कर रहा था उससे | कहा | उसे | मूसा ने |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اِنَّكَ | لَغَوِیٌّ | مُّبِیْنٌ ﴿18﴾ | فَلَمَّاۤ | اَنْ | اَرَادَ | اَنْ | یَّبْطِشَ |
| बेशक तू | अलबत्ता बहका हुआ है | खुल्लम-खुल्ला | तो जब | कि | उसने इरादा किया | कि | वो पकड़ ले |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| بِالَّذِیْ | هُوَ | عَدُوٌّ | لَّهُمَا ۙ | قَالَ | یٰمُوْسٰۤى | اَتُرِیْدُ | اَنْ |
| उसे जो | वो | दुश्मन था | उन दोनों का | उसने कहा | ऐ मूसा | क्या तू चाहता है | कि |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| تَقْتُلَنِیْ | كَمَا | قَتَلْتَ | نَفْسًا | بِالْاَمْسِ ۚ | اِنْ | تُرِیْدُ | اِلَّاۤ |
| तू क़त्ल कर दे मुझे | जैसा कि | क़त्ल किया तूने | एक नफ़्स को | कल | नहीं | तू चाहता | मगर |

ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اَنْ | تَكُوْنَ | جَبَّارًا | فِى الْاَرْضِ | وَمَا | تُرِيْدُ | اَنْ | تَكُوْنَ |
| कि | तू हो | ज़बरदस्ती करने वाला | ज़मीन में | और नहीं | तू चाहता | कि | तू हो |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مِنَ الْمُصْلِحِيْنَ ⑲ | وَجَآءَ | رَجُلٌ | مِّنْ اَقْصَا | الْمَدِيْنَةِ | يَسْعٰى ۬ |
| इस्लाह करने वालों में से | और आया | एक शख़्स | आख़िरी किनारे से | शहर के | दौड़ता हुआ |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| قَالَ | يٰمُوْسٰٓى | اِنَّ | الْمَلَاَ | يَاْتَمِرُوْنَ | بِكَ | لِيَقْتُلُوْكَ | فَاخْرُجْ |
| कहा | ऐ मूसा | बेशक | सरदार | वो मशवरा कर रहे हैं | तेरे बारे में | कि वो क़त्ल कर दें तुझे | पस निकल जा |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اِنِّىْ | لَكَ | مِنَ النّٰصِحِيْنَ ⑳ | فَخَرَجَ | مِنْهَا | خَآئِفًا | يَّتَرَقَّبُ ۬ | |
| बेशक मैं | तेरे लिए | ख़ैरख़्वाहों में से हूं | तो वो निकला | उससे | डरते हुए | ख़ुफ़िया टोह लगाते हुए | |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| قَالَ | رَبِّ | نَجِّنِىْ | مِنَ الْقَوْمِ | الظّٰلِمِيْنَ ㉑ ع | وَلَمَّا | تَوَجَّهَ | |
| कहा | ऐ मेरे रब | निजात दे मुझे | उन लोगों से | जो ज़ालिम हैं | और जब | उसने रुख़ किया | |

ع 2 8 5

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| تِلْقَآءَ | مَدْيَنَ | قَالَ | عَسٰى | رَبِّىْٓ | اَنْ | يَّهْدِيَنِىْ | سَوَآءَ |
| जानिब | मदयन के | कहा | उम्मीद है | मेरा रब | कि | वो दिखाएगा मुझे | सीधा |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| السَّبِيْلِ ㉒ | وَلَمَّا | وَرَدَ | مَآءَ | مَدْيَنَ | وَجَدَ | عَلَيْهِ | اُمَّةً |
| रास्ता | और जब | वो वारिद हुआ/पहुंचा | पानी पर | मदयन के | उसने पाया | उस पर | एक गिरोह को |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مِّنَ النَّاسِ | يَسْقُوْنَ ۗ | وَوَجَدَ | مِنْ دُوْنِهِمُ | امْرَاَتَيْنِ | تَذُوْدٰنِ ۚ |
| लोगों में से | वो पानी पिला रहे थे | और उसने पाया | उनके अलावा | दो औरतों को | वो दोनों हटाती थीं (मवेशी) |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| قَالَ | مَا | خَطْبُكُمَا ؕ | قَالَتَا | لَا نَسْقِىْ | حَتّٰى | يُصْدِرَ |
| कहा | क्या | मामला है तुम दोनों का | वो दोनों कहने लगीं | नहीं हम पानी पिलातीं | यहां तक कि | वापस ले जाऐं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الرِّعَآءُ سكتة | وَاَبُوْنَا | شَيْخٌ | كَبِيْرٌ ㉓ | فَسَقٰى | لَهُمَا | ثُمَّ |
| चरवाहे (अपने मवेशी) | और बाप हमारा | बूढ़ा | बड़ी उम्र का है | तो उसने पानी पिलाया | उन दोनों के लिए | फिर |

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| تَوَلّٰٓى | اِلَى الظِّلِّ | فَقَالَ | رَبِّ | اِنِّىْ | لِمَآ | اَنْزَلْتَ | اِلَىَّ |
| वो पलट गया | तरफ़ साए के | फिर वो कहने लगा | ऐ मेरे रब | बेशक मैं | उसके लिए जो | नाज़िल करे तू | मेरी तरफ़ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مِنْ خَيْرٍ | فَقِيْرٌ ﴿24﴾ | فَجَآءَتْهُ | اِحْدٰىهُمَا | تَمْشِىْ | عَلَى اسْتِحْيَآءٍ ۫ |
| भलाई में से | मोहताज हूं | तो आई उसके पास | उन दोनों में से एक | चलती हुई | साथ हया के |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| قَالَتْ | اِنَّ | اَبِىْ | يَدْعُوْكَ | لِيَجْزِيَكَ | اَجْرَ | مَا | سَقَيْتَ |
| वो कहने लगी | बेशक | मेरे वालिद | बुला रहे हैं तुम्हें | ताकि वो बदले में दें तुम्हें | उजरत | उसकी जो | पानी पिलाया तूने |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| لَنَا ؕ | فَلَمَّا | جَآءَهٗ | وَقَصَّ | عَلَيْهِ | الْقَصَصَ ۙ | قَالَ | لَا تَخَفْ ۟ قف وقفة |
| हमारे लिए | तो जब | वो आ गया उसके पास | और उसने बयान किया | उस पर | क़िस्सा | उसने कहा | ना तुम डरो |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| نَجَوْتَ | مِنَ الْقَوْمِ | الظّٰلِمِيْنَ ﴿25﴾ | قَالَتْ | اِحْدٰىهُمَا | يٰٓاَبَتِ |
| निजात पा गए हो तुम | उन लोगों से | जो ज़ालिम हैं | कहा | उन दोनों में से एक ने | ऐ मेरे अब्बा जान |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اسْتَاْجِرْهُ ۫ | اِنَّ | خَيْرَ | مَنِ | اسْتَاْجَرْتَ | الْقَوِىُّ | الْاَمِيْنُ ﴿26﴾ |
| उजरत पर रख लीजिए उसे | बेशक | बेहतरीन | वो जिसे | उजरत पर रखें आप | जो मज़बूत है | अमानतदार है |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| قَالَ | اِنِّىْٓ | اُرِيْدُ | اَنْ | اُنْكِحَكَ | اِحْدَى | ابْنَتَىَّ | هٰتَيْنِ |
| उसने कहा | बेशक मैं | मैं चाहता हूं | कि | मैं निकाह कर दूं तुमसे | एक का | अपनी दोनों बेटियों में से | इन दो |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| عَلٰٓى | اَنْ | تَاْجُرَنِىْ | ثَمٰنِىَ | حِجَجٍ ۚ | فَاِنْ | اَتْمَمْتَ | عَشْرًا |
| इस (शर्त) पर | कि | तुम मज़दूरी करो मेरी | आठ | साल | फिर अगर | पूरे कर दो तुम | दस (साल) |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فَمِنْ عِنْدِكَ ۚ | وَمَآ | اُرِيْدُ | اَنْ | اَشُقَّ | عَلَيْكَ ؕ | سَتَجِدُنِىْٓ |
| तो तुम्हारी तरफ़ से है | और नहीं | मैं चाहता | कि | मैं मशक़्क़त डालूं | तुम पर | यक़ीनन तुम पाओगे मुझे |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| اِنْ | شَآءَ | اللّٰهُ | مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿27﴾ | قَالَ | ذٰلِكَ | بَيْنِىْ |
| अगर | चाहा | अल्लाह ने | नेक लोगों में से | उसने कहा | ये (बात तय) है | दर्मियान मेरे |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَبَيْنَكَ ؕ | اَيَّمَا | الْاَجَلَيْنِ | قَضَيْتُ | فَلَا | عُدْوَانَ | عَلَيَّ ؕ |
| और दर्मियान तुम्हारे | जो भी | दो मुद्दतों में से | मैं पूरी कर दूं | तो ना होगी | कोई ज़्यादती | मुझ पर |

ع 3 7 6

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَاللّٰهُ | عَلٰى | مَا | نَقُوْلُ | وَكِيْلٌ ﴿28﴾ ع | فَلَمَّا | قَضٰى | مُوْسَى |
| और अल्लाह | ऊपर | उसके जो | हम कह रहे हैं | निगरान है | तो जब | पूरी की | मूसा ने |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْاَجَلَ | وَسَارَ | بِاَهْلِهٖٓ | اٰنَسَ | مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ | نَارًا ۚ | قَالَ |
| मुक़र्रर मुद्दत | और वो ले चला | अपने घर वालों को | उसने देखी | तूर की जानिब से | एक आग | कहा |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لِاَهْلِهِ | امْكُثُوْٓا | اِنِّيْٓ | اٰنَسْتُ | نَارًا | لَّعَلِّيْٓ | اٰتِيْكُمْ |
| अपने घर वालों से | ठहर जाओ | बेशक मैं | देखी है मैंने | एक आग | शायद कि मैं | मैं लाऊं तुम्हारे पास |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مِّنْهَا | بِخَبَرٍ | اَوْ | جَذْوَةٍ | مِّنَ النَّارِ | لَعَلَّكُمْ | تَصْطَلُوْنَ ﴿29﴾ | فَلَمَّآ |
| उसमें से | कोई ख़बर | या | कोई अंगारा | आग से | ताकि तुम | तुम ताप सको | तो जब |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| اَتٰىهَا | نُوْدِيَ | مِنْ شَاطِئِ | الْوَادِ | الْاَيْمَنِ | فِي الْبُقْعَةِ |
| वो आया उसके पास | वो पुकारा गया | किनारे से | वादी के | दाऐं जानिब की | जगह में |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| الْمُبٰرَكَةِ | مِنَ الشَّجَرَةِ | اَنْ | يّٰمُوْسٰٓى | اِنِّيْٓ | اَنَا | اللّٰهُ | رَبُّ |
| बरकत वाली | दरख़्त में से | कि | ऐ मूसा | बेशक मैं | मैं ही | अल्लाह हूं | रब |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْعٰلَمِيْنَ ﴿30﴾ لا | وَاَنْ | اَلْقِ | عَصَاكَ ؕ | فَلَمَّا | رَاٰهَا | تَهْتَزُّ |
| तमाम जहानों का | और ये कि | तू डाल दे | लाठी अपनी | तो जब | उसने देखा उसे | कि वो हिलती है |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| كَاَنَّهَا | جَآنٌّ | وَّلّٰى | مُدْبِرًا | وَّلَمْ | يُعَقِّبْ ؕ | يٰمُوْسٰٓى | اَقْبِلْ |
| गोया कि वो | सांप है | वो फिर गया | पीठ फेर कर | और ना | वो पलटा | ऐ मूसा | आगे बढ़ |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَلَا | تَخَفْ قف | اِنَّكَ | مِنَ الْاٰمِنِيْنَ ﴿31﴾ | اُسْلُكْ | يَدَكَ | فِيْ جَيْبِكَ |
| और ना | तू डर | बेशक तू | अमन पाने वालों में से है | दाख़िल कर | हाथ अपना | अपने गिरेबान में |

© AL-QURAN INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| تَخْرُجْ | بَيْضَآءَ | مِنْ غَيْرِ | سُوْٓءٍ ز | وَّاضْمُمْ | اِلَيْكَ | جَنَاحَكَ |
| वो निकलेगा | सफ़ेद/चमकता हुआ | बग़ैर किसी | मर्ज़/तकलीफ़ के | और मिला ले | अपनी तरफ़ | बाज़ू अपना |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مِنَ الرَّهْبِ | فَذٰنِكَ | بُرْهَانٰنِ | مِنْ رَّبِّكَ | اِلٰى فِرْعَوْنَ | وَمَلَا۟ئِهٖ ؕ |
| ख़ौफ़ से (बचने के लिए) | तो ये दोनों | दो निशानियां हैं | तेरे रब की तरफ़ से | तरफ़ फ़िरऔन | और उसके सरदारों के |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اِنَّهُمْ | كَانُوْا | قَوْمًا | فٰسِقِيْنَ ﴿32﴾ | قَالَ | رَبِّ | اِنِّيْ | قَتَلْتُ |
| बेशक वो | हैं वो | लोग | फ़ासिक़ | कहा | ऐ मेरे रब | बेशक मैं | क़त्ल किया मैंने |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مِنْهُمْ | نَفْسًا | فَاَخَافُ | اَنْ | يَّقْتُلُوْنِ ﴿33﴾ | وَاَخِيْ | هٰرُوْنُ | هُوَ |
| उनमें से | एक शख़्स को | तो मैं डरता हूं | कि | वो क़त्ल कर डालेंगे मुझे | और मेरा भाई | हारून | वो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَفْصَحُ | مِنِّيْ | لِسَانًا | فَاَرْسِلْهُ | مَعِيَ | رِدْاً | يُّصَدِّقُنِيْٓ ز |
| ज़्यादा फ़सीह है | मुझसे | ज़बान में | तो भेज दे उसे | मेरे साथ | मददगार के तौर पर | वो तस्दीक़ करे मेरी |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اِنِّيْٓ | اَخَافُ | اَنْ | يُّكَذِّبُوْنِ ﴿34﴾ | قَالَ | سَنَشُدُّ | عَضُدَكَ |
| बेशक मैं | मैं डरता हूं | कि | वो झुठला देंगे मुझे | फ़रमाया | अनक़रीब हम मज़बूत कर देंगे | बाज़ू तेरा |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بِاٰيٰتِنَآ ۚ | اَنْتُمَا | وَمَنِ | اتَّبَعَكُمَا | الْغٰلِبُوْنَ ﴿35﴾ | فَلَمَّا | جَآءَهُمْ |
| साथ हमारी निशानियों के | तुम दोनों | और जो | पैरवी करे तुम दोनों की | ग़ालिब आने वाले हो | फिर जब | आया उनके पास |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بِاٰيٰتِنَا | بَيِّنٰتٍ | قَالُوْا | مَا | هٰذَآ | اِلَّا | سِحْرٌ |
| साथ हमारी निशानियों के | खुली-खुली | उन्होंने कहा | नहीं | ये | मगर | एक जादू है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مُّوْسٰى | بِاٰيٰتِنَا | بَيِّنٰتٍ | قَالُوْا | مَا | هٰذَآ | اِلَّا |
| मूसा | साथ हमारी निशानियों के | खुली-खुली | उन्होंने कहा | नहीं | ये | मगर |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مُّفْتَرًى | وَّمَا | سَمِعْنَا | بِهٰذَا | فِيْٓ اٰبَآئِنَا | الْاَوَّلِيْنَ ﴿36﴾ | وَقَالَ |
| बनावटी/गढ़ा हुआ | और नहीं | सुना हमने | इसके बारे में | अपने आबा ओ अजदाद में | जो पहले (गुज़रे) | और कहा |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مُوْسٰى | رَبِّيْٓ | اَعْلَمُ | بِمَنْ | جَآءَ | بِالْهُدٰى | مِنْ عِنْدِهٖ | وَمَنْ |
| मूसा ने | मेरा रब | ज़्यादा जानता है | उसे जो | लाया है | हिदायत | उसके पास से | और उसे जो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| تَكُوْنُ | لَهٗ | عَاقِبَةُ | الدَّارِ ؕ | اِنَّهٗ | لَا يُفْلِحُ | الظّٰلِمُوْنَ ﴿37﴾ |
| है | उसके लिए | (अच्छा) अंजाम | घर का (आख़िरत के) | बेशक वो | नहीं वो फ़लाह पाते | जो ज़ालिम हैं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَقَالَ | فِرْعَوْنُ | يٰٓاَيُّهَا الْمَلَاُ | مَا | عَلِمْتُ | لَكُمْ | مِّنْ اِلٰهٍ |
| और कहा | फ़िरऔन ने | ऐ अहले दरबार | नहीं | जानता मैं | तुम्हारे लिए | कोई इलाह |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| غَيْرِيْ ۚ | فَاَوْقِدْ | لِيْ | يٰهَامٰنُ | عَلَى الطِّيْنِ | فَاجْعَلْ | لِّيْ |
| अपने सिवा | पस जलाओ (आग) | मेरे लिए | ऐ हामान | मिट्टी पर | फिर बनाओ | मेरे लिए |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| صَرْحًا | لَّعَلِّيْٓ | اَطَّلِعُ | اِلٰٓى اِلٰهِ مُوْسٰى ۙ | وَاِنِّيْ | لَاَظُنُّهٗ |
| एक बुलंद इमारत | शायद कि मैं | मैं झांकूं | तरफ़ मूसा के इलाह के | और बेशक मैं | अलबत्ता मैं समझता हूं उसे |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿38﴾ | وَاسْتَكْبَرَ | هُوَ | وَجُنُوْدُهٗ | فِي الْاَرْضِ | بِغَيْرِ |
| झूठों में से | और तकब्बुर किया | उसने | और उसके लश्करों ने | ज़मीन में | बग़ैर |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْحَقِّ | وَظَنُّوْٓا | اَنَّهُمْ | اِلَيْنَا | لَا يُرْجَعُوْنَ ﴿39﴾ | فَاَخَذْنٰهُ | وَجُنُوْدَهٗ |
| हक़ के | और वो समझते थे | बेशक वो | हमारी तरफ़ | ना वो लौटाए जाऐंगे | तो पकड़ लिया हमने उसे | और उसके लश्करों को |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فَنَبَذْنٰهُمْ | فِي الْيَمِّ ۚ | فَانْظُرْ | كَيْفَ | كَانَ | عَاقِبَةُ | الظّٰلِمِيْنَ ﴿40﴾ |
| फिर फेंक दिया हमने उन्हें | दरिया में | तो देखो | किस तरह | हुआ | अंजाम | ज़ालिमों का |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَجَعَلْنٰهُمْ | اَئِمَّةً | يَّدْعُوْنَ | اِلَى النَّارِ ۚ | وَيَوْمَ | الْقِيٰمَةِ |
| और बना दिया हमने उन्हें | इमाम/रहनुमा | जो बुलाते थे | तरफ़ आग के | और दिन | क़यामत के |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿41﴾ | وَاَتْبَعْنٰهُمْ | فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا | لَعْنَةً ۚ | وَيَوْمَ |
| ना वो मदद दिए जाऐंगे | और पीछे लगा दी हमने उनके | इस दुनिया में | लानत | और दिन |

© AL HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 4 14 7

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْقِيٰمَةِ | هُمْ | مِّنَ الْمَقْبُوْحِيْنَ ﴿42﴾ ع | وَلَقَدْ | اٰتَيْنَا | مُوْسَى | الْكِتٰبَ |
| क़यामत के | वो | बदहाल लोगों में से होंगे | और अलबत्ता तहक़ीक | दी हमने | मूसा को | किताब |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مِنْۢ بَعْدِ | مَآ | اَهْلَكْنَا | الْقُرُوْنَ الْاُوْلٰى | بَصَآئِرَ | لِلنَّاسِ |
| उसके बाद कि | जो | हलाक कर दिया हमने | पहली उम्मतों को | खुले दलाइल थे | लोगों के लिए |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَهُدًى | وَّرَحْمَةً | لَّعَلَّهُمْ | يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿43﴾ | وَمَا | كُنْتَ |
| और हिदायत | और रहमत थी | ताकि वो | वो नसीहत पकड़ें | और ना | थे आप |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بِجَانِبِ الْغَرْبِيِّ | اِذْ | قَضَيْنَآ | اِلٰى مُوْسَى | الْاَمْرَ | وَمَا | كُنْتَ |
| मग़रिबी जानिब (तूर की) | जब | वही की हमने | तरफ़ मूसा के | हुक्म की | और ना | थे आप |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿44﴾ لا | وَلٰكِنَّآ | اَنْشَاْنَا | قُرُوْنًا | فَتَطَاوَلَ | عَلَيْهِمُ |
| हाज़िर होने वालों में से | और लेकिन हम | उठाईं हमने | उम्मतें | तो तवील हो गई | उन पर |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْعُمُرُ ۚ | وَمَا | كُنْتَ | ثَاوِيًا | فِيْٓ اَهْلِ مَدْيَنَ | تَتْلُوْا | عَلَيْهِمْ |
| मुद्दत | और ना | थे आप | मुक़ीम | अहले मदयन में | कि आप पढ़ते | उन पर |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اٰيٰتِنَا لا | وَلٰكِنَّا | كُنَّا | مُرْسِلِيْنَ ﴿45﴾ | وَمَا | كُنْتَ | بِجَانِبِ الطُّوْرِ |
| आयात हमारी | और लेकिन हम | थे हम ही | भेजने वाले | और ना | थे आप | तूर की जानिब |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اِذْ | نَادَيْنَا | وَلٰكِنْ | رَّحْمَةً | مِّنْ رَّبِّكَ | لِتُنْذِرَ | قَوْمًا |
| जब | पुकारा हमने (मूसा को) | और लेकिन | ये रहमत है | आपके रब की तरफ़ से | ताकि आप डराऐं | एक क़ौम को |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مَّآ | اَتٰىهُمْ | مِّنْ نَّذِيْرٍ | مِّنْ قَبْلِكَ | لَعَلَّهُمْ | يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿46﴾ |
| नहीं | आया उनके पास | कोई डराने वाला | आपसे पहले | शायद कि वो | वो नसीहत पकड़ें |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَلَوْلَآ | اَنْ | تُصِيْبَهُمْ | مُّصِيْبَةٌ ۢ | بِمَا | قَدَّمَتْ | اَيْدِيْهِمْ |
| और अगर ना होता | ये कि | पहुंचती उन्हें | कोई मुसीबत | बवजह उसके जो | आगे भेजा | उनके हाथों ने |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فَيَقُوْلُوْا | رَبَّنَا | لَوْلَآ | اَرْسَلْتَ | اِلَيْنَا | رَسُوْلًا | فَنَتَّبِعَ |
| तो वो कहते | ऐ हमारे रब | क्यों ना | भेजा तू ने | हमारी तरफ़ | कोई रसूल | तो हम पैरवी करते |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| اٰيٰتِكَ | وَنَكُوْنَ | مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿47﴾ | فَلَمَّا | جَآءَهُمُ | الْحَقُّ |
| तेरी आयात की | और हम हो जाते | ईमान लाने वालों में से | तो जब | पास आया उनके | हक़ |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مِنْ عِنْدِنَا | قَالُوْا | لَوْلَآ | اُوْتِيَ | مِثْلَ | مَآ | اُوْتِيَ | مُوْسٰى ؕ |
| हमारे पास से | उन्होंने कहा | क्यों ना | वो दिया गया | मानिंद | उसके जो | दिए गए | मूसा |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَوَلَمْ | يَكْفُرُوْا | بِمَآ | اُوْتِيَ | مُوْسٰى | مِنْ قَبْلُ ۚ | قَالُوْا |
| क्या भला नहीं | कुफ़्र किया उन्होंने | उसका जो | दिए गए | मूसा | इससे पहले | उन्होंने कहा |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| سِحْرٰنِ | تَظٰهَرَا وقف قف | وَقَالُوْٓا | اِنَّا | بِكُلٍّ | كٰفِرُوْنَ ﴿48﴾ |
| दोनों जादू हैं | एक दूसरे की मदद करते हैं | और उन्होंने कहा | बेशक हम | हर एक के | इंकारी हैं |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| قُلْ | فَاْتُوْا | بِكِتٰبٍ | مِّنْ عِنْدِ | اللّٰهِ | هُوَ | اَهْدٰى | مِنْهُمَآ |
| कह दीजिए | पस ले आओ | कोई किताब | पास से | अल्लाह के | वो | ज़्यादा हिदायत वाली हो | इन दोनों से |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَتَّبِعْهُ | اِنْ | كُنْتُمْ | صٰدِقِيْنَ ﴿49﴾ | فَاِنْ | لَّمْ | يَسْتَجِيْبُوْا |
| मैं पैरवी कर लूंगा उसकी | अगर | हो तुम | सच्चे | फिर अगर | ना | उन्होंने क़ुबूल की |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَكَ | فَاعْلَمْ | اَنَّمَا | يَتَّبِعُوْنَ | اَهْوَآءَهُمْ ؕ | وَمَنْ | اَضَلُّ |
| आपकी (बात) | तो जान लीजिए | बेशक | वो पैरवी कर रहे हैं | अपनी ख़्वाहिशात की | और कौन | ज़्यादा गुमराह है |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مِمَّنِ | اتَّبَعَ | هَوٰىهُ | بِغَيْرِ | هُدًى | مِّنَ اللّٰهِ ؕ | اِنَّ | اللّٰهَ |
| उससे जो | पैरवी करे | अपनी ख़्वाहिश की | बग़ैर | हिदायत के | अल्लाह की तरफ़ से | बेशक | अल्लाह |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَا يَهْدِي | الْقَوْمَ | الظّٰلِمِيْنَ ﴿50﴾ ع | وَلَقَدْ | وَصَّلْنَا | لَهُمُ | الْقَوْلَ |
| नहीं वो हिदायत देता | उन लोगों को | जो ज़ालिम हैं | और अलबत्ता तहक़ीक़ | पै दर पै भेजा हमने | उनके लिए | कलाम (अपना) |

ع 5 8 8

© AL-QURAN INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| لَعَلَّهُمْ | يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿51﴾ | اَلَّذِيْنَ | اٰتَيْنٰهُمُ | الْكِتٰبَ | مِنْ قَبْلِهٖ |
| ताकि वो | वो नसीहत पकड़ें | वो लोग जो | दी हमने उन्हें | किताब | इससे पहले |

النصف

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| هُمْ | بِهٖ | يُؤْمِنُوْنَ ﴿52﴾ | وَاِذَا | يُتْلٰى | عَلَيْهِمْ | قَالُوْٓا | اٰمَنَّا |
| वो | उस पर | वो ईमान लाते हैं | और जब | पढ़ा जाता है | उन पर (क़ुरआन) | वो कहते हैं | ईमान लाए हम |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بِهٖٓ | اِنَّهُ | الْحَقُّ | مِنْ رَّبِّنَآ | اِنَّا | كُنَّا | مِنْ قَبْلِهٖ |
| उस पर | बेशक वो | हक़ है | हमारे रब की तरफ़ से | बेशक हम | थे हम | उससे पहले ही |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مُسْلِمِيْنَ ﴿53﴾ | اُولٰٓئِكَ | يُؤْتَوْنَ | اَجْرَهُمْ | مَّرَّتَيْنِ | بِمَا | صَبَرُوْا |
| फ़रमांबरदार | यही लोग हैं | जो दिए जाऐंगे | अजर अपना | दो बार | बवजह उसके जो | उन्होंने सब्र किया |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَيَدْرَءُوْنَ | بِالْحَسَنَةِ | السَّيِّئَةَ | وَمِمَّا | رَزَقْنٰهُمْ | يُنْفِقُوْنَ ﴿54﴾ |
| और वो दूर करते हैं | साथ भलाई के | बुराई को | और उसमें से जो | रिज़्क़ दिया हमने उन्हें | वो ख़र्च करते हैं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَاِذَا | سَمِعُوا | اللَّغْوَ | اَعْرَضُوْا | عَنْهُ | وَقَالُوْا | لَنَآ |
| और जब | वो सुनते हैं | बेहूदा बात को | वो ऐराज़ करते हैं | उस से | और वो कहते हैं | हमारे लिए |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| اَعْمَالُنَا | وَلَكُمْ | اَعْمَالُكُمْ ۫ | سَلٰمٌ | عَلَيْكُمْ ۫ | لَا نَبْتَغِي |
| आमाल हमारे | और तुम्हारे लिए | आमाल तुम्हारे | सलाम हो | तुम पर | नहीं हम चाहते |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْجٰهِلِيْنَ ﴿55﴾ | اِنَّكَ | لَا تَهْدِيْ | مَنْ | اَحْبَبْتَ | وَلٰكِنَّ | اللّٰهَ |
| जाहिलों को | बेशक आप | नहीं आप हिदायत दे सकते | जिसे | पसंद करें आप | और लेकिन | अल्लाह |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| يَهْدِيْ | مَنْ | يَّشَآءُ ۚ | وَهُوَ | اَعْلَمُ | بِالْمُهْتَدِيْنَ ﴿56﴾ | وَقَالُوْٓا |
| वो हिदायत देता है | जिसे | वो चाहता है | और वो | ख़ूब जानता है | हिदायत पाने वालों को | और उन्होंने कहा |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اِنْ | نَّتَّبِعِ | الْهُدٰى | مَعَكَ | نُتَخَطَّفْ | مِنْ اَرْضِنَا ؕ | اَوَلَمْ |
| अगर | हम पैरवी करें | हिदायत की | आपके साथ | हम उचक लिए जाऐंगे | अपनी ज़मीन से | क्या भला नहीं |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| نُمَكِّنْ | لَّهُمْ | حَرَمًا | اٰمِنًا | يُّجْبٰٓى | اِلَيْهِ | ثَمَرٰتُ | كُلِّ |
| हमने जगह दी | उन्हें | हरम | अमन वाले में | खिंचे चले आते हैं | तरफ़ उसके | फल | हर |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| شَيْءٍ | رِّزْقًا | مِّنْ لَّدُنَّا | وَلٰكِنَّ | اَكْثَرَهُمْ | لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿57﴾ | وَكَمْ |
| चीज़ के | रिज़्क़ के तौर पर | हमारी तरफ़ से | और लेकिन | अक्सर उनके | नहीं वो इल्म रखते | और कितनी ही |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَهْلَكْنَا | مِنْ قَرْيَةٍۭ | بَطِرَتْ | مَعِيْشَتَهَا ۚ | فَتِلْكَ | مَسٰكِنُهُمْ | لَمْ |
| हलाक कीं हमने | बस्तियां | जो इतराती थीं | अपनी मईशत पर | तो ये | घर हैं उनके | नहीं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| تُسْكَنْ | مِّنْۢ بَعْدِهِمْ | اِلَّا | قَلِيْلًا ؕ | وَكُنَّا | نَحْنُ | الْوٰرِثِيْنَ ﴿58﴾ |
| वो बसाए गए | बाद उनके | मगर | बहुत थोड़े | और हैं हम | हम ही | वारिस |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَمَا | كَانَ | رَبُّكَ | مُهْلِكَ | الْقُرٰى | حَتّٰى | يَبْعَثَ | فِيْٓ اُمِّهَا |
| और नहीं | है | रब आपका | हलाक करने वाला | बस्तियों को | यहां तक कि | वो भेज दे | उनके मरकज़ में |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| رَسُوْلًا | يَّتْلُوْا | عَلَيْهِمْ | اٰيٰتِنَا ۚ | وَمَا | كُنَّا | مُهْلِكِى | الْقُرٰٓى |
| कोई रसूल | जो पढ़ता हो | उन पर | आयात हमारी | और नहीं | हैं हम | हलाक करने वाले | बस्तियों को |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اِلَّا | وَاَهْلُهَا | ظٰلِمُوْنَ ﴿59﴾ | وَمَآ | اُوْتِيْتُمْ | مِّنْ شَيْءٍ | فَمَتَاعُ |
| मगर | इस हाल में कि रहने वाले उसके | ज़ालिम हों | और जो भी | दिए गए तुम | कोई चीज़ | पस सामान है |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| الْحَيٰوةِ | الدُّنْيَا | وَزِيْنَتُهَا ۚ | وَمَا | عِنْدَ | اللّٰهِ | خَيْرٌ | وَّاَبْقٰى ؕ |
| ज़िंदगी का | दुनिया की | और रौनक़ उसकी | और जो कुछ | पास है | अल्लाह के | बेहतर है | और ज़्यादा बाक़ी रहने वाला |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اَفَلَا | تَعْقِلُوْنَ ﴿60﴾ ع | اَفَمَنْ | وَّعَدْنٰهُ | وَعْدًا | حَسَنًا | فَهُوَ | ع 6 10 9 |
| क्या भला नहीं | तुम अक़्ल से काम लेते | क्या भला वो जो | वादा किया हमने उससे | वादा | अच्छा | फिर वो | |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَاقِيْهِ | كَمَنْ | مَّتَّعْنٰهُ | مَتَاعَ | الْحَيٰوةِ | الدُّنْيَا | ثُمَّ |
| पाने वाला है उसे | मानिंद उसके हो सकता है | सामान दिया हमने जिसे | सामान | ज़िंदगी का | दुनिया की | फिर |

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| هُوَ | يَوْمَ | الْقِيٰمَةِ | مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ ﴿61﴾ | وَ يَوْمَ | يُنَادِيْهِمْ | فَيَقُوْلُ |
| वो | दिन | क़यामत के | हाज़िर किए जाने वालों में से होगा | और जिस दिन | वो पुकारेगा उन्हें | फिर वो फ़रमाएगा |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَيْنَ | شُرَكَآءِيَ | الَّذِيْنَ | كُنْتُمْ | تَزْعُمُوْنَ ﴿62﴾ | قَالَ | الَّذِيْنَ |
| कहां हैं | शरीक मेरे | वो जिनका | थे तुम | तुम गुमान रखते | कहेंगे | वो लोग |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| حَقَّ | عَلَيْهِمُ | الْقَوْلُ | رَبَّنَا | هٰٓؤُلَآءِ | الَّذِيْنَ | اَغْوَيْنَا ۚ |
| सच हो गई | उन पर | बात | ऐ हमारे रब | ये हैं | वो लोग जिन्हें | गुमराह किया हमने |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَغْوَيْنٰهُمْ | كَمَا | غَوَيْنَا ۚ | تَبَرَّاْنَآ | اِلَيْكَ ۫ | مَا | كَانُوْٓا |
| गुमराह किया था हमने उन्हें | जैसा कि | गुमराह हुए हम | इज़हारे बराअत करते हैं हम (उनसे) | तेरे सामने | ना | थे वो |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| اِيَّانَا | يَعْبُدُوْنَ ﴿63﴾ | وَ قِيْلَ | ادْعُوْا | شُرَكَآءَكُمْ | فَدَعَوْهُمْ |
| सिर्फ़ हमारी ही | वो इबादत करते | और कहा जाएगा | पुकारो | अपने शरीकों को | तो वो पुकारेंगे उन्हें |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| فَلَمْ | يَسْتَجِيْبُوْا | لَهُمْ | وَ رَاَوُا | الْعَذَابَ ۚ | لَوْ | اَنَّهُمْ | كَانُوْا |
| फिर ना | वो जवाब देंगे | उन्हें | और वो देख लेंगे | अज़ाब को | काश | कि बेशक वो | होते वो |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| يَهْتَدُوْنَ ﴿64﴾ | وَ يَوْمَ | يُنَادِيْهِمْ | فَيَقُوْلُ | مَاذَآ | اَجَبْتُمْ |
| वो हिदायत पाते | और जिस दिन | वो पुकारेगा उन्हें | फिर वो कहेगा | क्या कुछ | जवाब दिया तुमने |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| الْمُرْسَلِيْنَ ﴿65﴾ | فَعَمِيَتْ | عَلَيْهِمُ | الْاَنْۢبَآءُ | يَوْمَئِذٍ | فَهُمْ |
| रसूलों को | तो अंधी हो जाऐंगी | उन पर | ख़बरें | उस दिन | तो वो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَا يَتَسَآءَلُوْنَ ﴿66﴾ | فَاَمَّا | مَنْ | تَابَ | وَ اٰمَنَ | وَ عَمِلَ | صَالِحًا |
| ना वो आपस में सवाल करेंगे | तो रहा | वो जिसने | तौबा की | और ईमान लाया | और उसने अमल किया | नेक |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| فَعَسٰٓى | اَنْ | يَّكُوْنَ | مِنَ الْمُفْلِحِيْنَ ﴿67﴾ | وَ رَبُّكَ | يَخْلُقُ | مَا |
| तो उम्मीद है | कि | होगा वो | फ़लाह पाने वालों में से | और रब आपका | पैदा करता है | जो |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| يَشَآءُ | وَيَخْتَارُ ؕ | مَا | كَانَ | لَهُمُ | الْخِيَرَةُ ؕ | سُبْحٰنَ | اللّٰهِ |
| वो चाहता है | और वो मुंतख़िब कर लेता है | नहीं | है | उनके लिए | इख़्तियार | पाक है | अल्लाह |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَتَعٰلٰى | عَمَّا | يُشْرِكُوْنَ ﴿68﴾ | وَرَبُّكَ | يَعْلَمُ | مَا | تُكِنُّ |
| और वो बुलंदतर है | उससे जो | वो शरीक ठहराते हैं | और रब आप का | वो जानता है | जो कुछ | छुपाते हैं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| صُدُوْرُهُمْ | وَمَا | يُعْلِنُوْنَ ﴿69﴾ | وَهُوَ | اللّٰهُ | لَآ اِلٰهَ | اِلَّا |
| सीने उनके | और जो कुछ | वो ज़ाहिर करते हैं | और वो | अल्लाह है | नहीं कोई इलाह (बरहक़) | मगर |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| هُوَ ؕ | لَهُ | الْحَمْدُ | فِي الْاُوْلٰى | وَالْاٰخِرَةِ ۫ | وَلَهُ | الْحُكْمُ |
| वो ही | उसी के लिए है | सब तारीफ़ | दुनिया में | और आख़िरत में | और उसी का | हुक्म है |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَاِلَيْهِ | تُرْجَعُوْنَ ﴿70﴾ | قُلْ | اَرَءَيْتُمْ | اِنْ | جَعَلَ | اللّٰهُ | عَلَيْكُمُ |
| और उसी की तरफ़ | तुम लौटाए जाओगे | कह दीजिए | क्या ग़ौर किया तुमने | अगर | कर दे | अल्लाह | तुम पर |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| الَّيْلَ | سَرْمَدًا | اِلٰى يَوْمِ | الْقِيٰمَةِ | مَنْ | اِلٰهٌ | غَيْرُ | اللّٰهِ |
| रात | हमेशा/दाइमी | दिन तक | क़यामत के | कौन है | इलाह | सिवाए | अल्लाह के |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| يَاْتِيْكُمْ | بِضِيَآءٍ ؕ | اَفَلَا | تَسْمَعُوْنَ ﴿71﴾ | قُلْ | اَرَءَيْتُمْ | اِنْ |
| जो लाए तुम्हारे पास | कोई रोशनी | क्या भला नहीं | तुम सुनते | कह दीजिए | क्या ग़ौर किया तुमने | अगर |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| جَعَلَ | اللّٰهُ | عَلَيْكُمُ | النَّهَارَ | سَرْمَدًا | اِلٰى يَوْمِ | الْقِيٰمَةِ | مَنْ |
| कर दे | अल्लाह | तुम पर | दिन | हमेशा/दाइमी | दिन तक | क़यामत के | कौन |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اِلٰهٌ | غَيْرُ | اللّٰهِ | يَاْتِيْكُمْ | بِلَيْلٍ | تَسْكُنُوْنَ | فِيْهِ ؕ | اَفَلَا |
| इलाह है | सिवाय | अल्लाह के | जो लाएगा तुम्हारे पास | रात को | तुम सुकून पा सको | उसमें | क्या फिर नहीं |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| تُبْصِرُوْنَ ﴿72﴾ | وَمِنْ رَّحْمَتِهٖ | جَعَلَ | لَكُمُ | الَّيْلَ | وَالنَّهَارَ |
| तुम देखते | और उसकी रहमत में से है | कि उसने बनाया | तुम्हारे लिए | रात | और दिन को |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| لِتَسْكُنُوْا | فِيْهِ | وَلِتَبْتَغُوْا | مِنْ فَضْلِهٖ | وَلَعَلَّكُمْ | تَشْكُرُوْنَ ﴿73﴾ |
| ताकि तुम सुकून पाओ | इसमें | और ताकि तुम तलाश करो | उसके फ़ज़्ल में से | और ताकि तुम | तुम शुक्र अदा करो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَيَوْمَ | يُنَادِيْهِمْ | فَيَقُوْلُ | اَيْنَ | شُرَكَآءِيَ | الَّذِيْنَ | كُنْتُمْ |
| और जिस दिन | वो पुकारेगा उन्हें | तो वो फ़रमाएगा | कहां हैं | मेरे शरीक | वो जिनका | थे तुम |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| تَزْعُمُوْنَ ﴿74﴾ | وَنَزَعْنَا | مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ | شَهِيْدًا | فَقُلْنَا | هَاتُوْا |
| तुम दावा करते | और निकाल लाऐंगे हम | हर उम्मत में से | एक गवाह | तो कहेंगे हम | लाओ |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بُرْهَانَكُمْ | فَعَلِمُوْٓا | اَنَّ | الْحَقَّ | لِلّٰهِ | وَضَلَّ | عَنْهُمْ |
| दलील अपनी | तो वो जान लेंगे | बेशक | हक़ | अल्लाह ही के लिए है | और गुम हो जाऐंगे | उनसे |

ع 7 15 10

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مُوْسٰى | مِنْ قَوْمِ | كَانَ | قَارُوْنَ | اِنَّ | يَفْتَرُوْنَ ﴿75﴾ ع | كَانُوْا | مَّا |
| मूसा की | क़ौम से | था वो | क़ारून | बेशक | गढ़ा करते | थे वो | जो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مَفَاتِحَهٗ | اِنَّ | مَآ | مِنَ الْكُنُوْزِ | وَاٰتَيْنٰهُ | عَلَيْهِمْ ص | فَبَغٰى |
| कुंजियां उसकी | बेशक | इस क़द्र कि | ख़ज़ानों में से | और अता किया हमने उसे | उन पर | तो उसने सरकशी की |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَتَنُوْٓاُ | بِالْعُصْبَةِ | اُولِي الْقُوَّةِ ق | اِذْ | قَالَ | لَهٗ | قَوْمُهٗ |
| अलबत्ता वो भारी होती थीं | एक जमाअत पर | क़ुव्वत वाली | जब | कहा | उसे | उसकी क़ौम ने |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَا تَفْرَحْ | اِنَّ | اللّٰهَ | لَا يُحِبُّ | الْفَرِحِيْنَ ﴿76﴾ | وَابْتَغِ | فِيْمَآ |
| ना तुम इतराओ | बेशक | अल्लाह | नहीं वो पसंद करता | इतराने वालों को | और तलाश करो | इसमें से जो |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اٰتٰىكَ | اللّٰهُ | الدَّارَ | الْاٰخِرَةَ | وَلَا | تَنْسَ | نَصِيْبَكَ | مِنَ الدُّنْيَا |
| दिया तुम्हें | अल्लाह ने | घर | आख़िरत का | और ना | तुम भूलो | हिस्सा अपना | दुनिया में से |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَاَحْسِنْ | كَمَآ | اَحْسَنَ | اللّٰهُ | اِلَيْكَ | وَلَا | تَبْغِ | الْفَسَادَ |
| और एहसान करो | जैसा कि | एहसान किया | अल्लाह ने | तुम पर | और ना | तुम चाहो | फ़साद |

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| فِي الْأَرْضِ ۖ | إِنَّ | اللَّهَ | لَا يُحِبُّ | الْمُفْسِدِينَ ﴿77﴾ | قَالَ | إِنَّمَا |
|---|---|---|---|---|---|---|
| ज़मीन में | बेशक | अल्लाह | नहीं वो पसंद करता | फ़साद करने वालों को | उसने कहा | बेशक |

| أُوتِيتُهُ | عَلَىٰ عِلْمٍ | عِندِي ۚ | أَوَلَمْ | يَعْلَمْ | أَنَّ | اللَّهَ | قَدْ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दिया गया हूं मैं इसे | इल्म की बिना पर | जो मेरे पास है | क्या भला नहीं | उसने जाना | बेशक | अल्लाह ने | तहक़ीक़ |

| أَهْلَكَ | مِن قَبْلِهِ | مِنَ الْقُرُونِ | مَنْ هُوَ | أَشَدُّ | مِنْهُ | قُوَّةً |
|---|---|---|---|---|---|---|
| उसने हलाक कर दिया | इससे पहले | कई उम्मतों को | वो जो | ज़्यादा सख़्त थीं | उससे | क़ुव्वत में |

| وَأَكْثَرُ | جَمْعًا ۚ | وَلَا | يُسْأَلُ | عَن ذُنُوبِهِمُ | الْمُجْرِمُونَ ﴿78﴾ |
|---|---|---|---|---|---|
| और अक्सर | जमीअत में | और नहीं | पूछे जाते | अपने गुनाहों के बारे में | मुजरिम |

| فَخَرَجَ | عَلَىٰ قَوْمِهِ | فِي زِينَتِهِ ۖ | قَالَ | الَّذِينَ | يُرِيدُونَ | الْحَيَاةَ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तो वो निकला | अपनी क़ौम पर | अपनी ज़ीनत में | कहा | उन लोगों ने जो | चाहते थे | ज़िंदगी |

| الدُّنْيَا | يَا لَيْتَ | لَنَا | مِثْلَ | مَا | أُوتِيَ | قَارُونُ | إِنَّهُ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| दुनिया की | ऐ काश कि होता | हमारे लिए | मानिंद | इसके जो | दिया गया | क़ारून | यक़ीनन वो |

| لَذُو حَظٍّ | عَظِيمٍ ﴿79﴾ | وَقَالَ | الَّذِينَ | أُوتُوا | الْعِلْمَ | وَيْلَكُمْ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अलबत्ता क़िस्मत वाला है | बहुत बड़ी | और कहा | उन लोगों ने जो | दिए गए थे | इल्म | अफ़सोस तुम पर |

| ثَوَابُ | اللَّهِ | خَيْرٌ | لِّمَنْ | آمَنَ | وَعَمِلَ | صَالِحًا ۚ | وَلَا |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| सवाब | अल्लाह का | बेहतर है | उसके लिए जो | ईमान लाया | और उसने अमल किया | नेक | और नहीं |

| يُلَقَّاهَا | إِلَّا | الصَّابِرُونَ ﴿80﴾ | فَخَسَفْنَا | بِهِ | وَبِدَارِهِ | الْأَرْضَ قف |
|---|---|---|---|---|---|---|
| पा सकते उसे | मगर | सब्र करने वाले | पस धंसा दिया हमने | उसे | और उसके घर को | ज़मीन में |

| فَمَا | كَانَ | لَهُ | مِن فِئَةٍ | يَنصُرُونَهُ | مِن دُونِ | اللَّهِ ق |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तो ना | था | उसके लिए | कोई गिरोह | जो मदद करता उसकी | सिवाए | अल्लाह के |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَمَا | كَانَ | مِنَ الْمُنْتَصِرِيْنَ ﴿81﴾ | وَاَصْبَحَ | الَّذِيْنَ | تَمَنَّوْا |
| और ना | था वो | बदला लेने वालों में से | और सुबह की | उन लोगों ने जो | तमन्ना कर रहे थे |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مَكَانَهٗ | بِالْاَمْسِ | يَقُوْلُوْنَ | وَيْكَاَنَّ | اللّٰهَ | يَبْسُطُ | الرِّزْقَ |
| उसके मक़ाम की | कल तक | वो कह रहे थे | अफ़सोस,बेशक | अल्लाह | वो फैला देता है | रिज़्क़ |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| لِمَنْ | يَّشَآءُ | مِنْ عِبَادِهٖ | وَيَقْدِرُ ج | لَوْلَآ | اَنْ | مَّنَّ | اللّٰهُ |
| जिसके लिए | वो चाहता है | अपने बंदों में से | और वो तंग कर देता है | अगर ना होता | ये कि | एहसान करता | अल्लाह |

ع 8 7 11

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| عَلَيْنَا | لَخَسَفَ | بِنَا ط | وَيْكَاَنَّهٗ | لَا يُفْلِحُ | الْكٰفِرُوْنَ ﴿82﴾ ع | تِلْكَ |
| हम पर | अलबत्ता वो धंसा देता | हमें (भी) | अफ़सोस,बेशक वो | नहीं वो फ़लाह पाते | जो काफ़िर हैं | ये है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الدَّارُ | الْاٰخِرَةُ | نَجْعَلُهَا | لِلَّذِيْنَ | لَا يُرِيْدُوْنَ | عُلُوًّا | فِى الْاَرْضِ |
| घर | आख़िरत का | हम बनाते हैं उसे | उन के लिए जो | नहीं वो चाहते | बुलंदी | ज़मीन में |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَلَا | فَسَادًا ط | وَالْعَاقِبَةُ | لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿83﴾ | مَنْ | جَآءَ | بِالْحَسَنَةِ |
| और ना | फ़साद | और अंजाम | मुत्तक़ी लोगों के लिए है | जो कोई | लाया | भलाई |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| فَلَهٗ | خَيْرٌ | مِّنْهَا ج | وَمَنْ | جَآءَ | بِالسَّيِّئَةِ | فَلَا | يُجْزَى |
| तो उसके लिए है | बेहतर | उससे | और जो कोई | लाया | बुराई | तो नहीं | वो बदला दिए जाऐंगे |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| الَّذِيْنَ | عَمِلُوا | السَّيِّاٰتِ | اِلَّا | مَا | كَانُوْا | يَعْمَلُوْنَ ﴿84﴾ | اِنَّ |
| जिन्होंने | अमल किए | बुरे | मगर | उसका जो | थे वो | वो अमल करते | बेशक |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الَّذِىْ | فَرَضَ | عَلَيْكَ | الْقُرْاٰنَ | لَرَآدُّكَ | اِلٰى مَعَادٍ ط | قُلْ |
| वो जिसने | फ़र्ज़ किया | आप पर | क़ुरआन को | अलबत्ता फेर ले जाने वाला है आपको | तरफ़ लौटने की जगह के | कह दीजिए |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| رَبِّىْٓ | اَعْلَمُ | مَنْ | جَآءَ | بِالْهُدٰى | وَمَنْ | هُوَ | فِىْ ضَلٰلٍ |
| मेरा रब | ख़ूब जानता है | उसे जो | लाया | हिदायत को | और उसे जो | हो वो | गुमराही में |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مُّبِيْنٍ ﴿85﴾ | وَمَا | كُنْتَ | تَرْجُوْٓا | اَنْ | يُّلْقٰٓى | اِلَيْكَ | الْكِتٰبُ |
| खुली | और ना | थे आप | आप उम्मीद रखते | कि | इल्क़ा की जाएगी | तरफ़ आपके | किताब |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| اِلَّا | رَحْمَةً | مِّنْ رَّبِّكَ | فَلَا تَكُوْنَنَّ | ظَهِيْرًا | لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿86﴾ |
| मगर | रहमत है | आपके रब की तरफ़ से | पस हरगिज़ ना हों आप | मददगार | काफ़िरों के |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَلَا | يَصُدُّنَّكَ | عَنْ اٰيٰتِ | اللّٰهِ | بَعْدَ | اِذْ | اُنْزِلَتْ | اِلَيْكَ |
| और ना | वो हरगिज़ रोकें आपको | आयात से | अल्लाह की | बाद इसके कि | जब | वो नाज़िल की गईं | आपकी तरफ़ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَادْعُ | اِلٰى رَبِّكَ | وَلَا تَكُوْنَنَّ | مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿87﴾ ج | وَلَا | تَدْعُ |
| और दावत दीजिए | अपने रब की तरफ़ | और हरगिज़ ना हों आप | मुशरिकों में से | और ना | आप पुकारिए |

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| مَعَ | اللّٰهِ | اِلٰهًا | اٰخَرَ | لَآ اِلٰهَ | اِلَّا | هُوَ ؕ قف | كُلُّ | شَيْءٍ |
| साथ | अल्लाह के | कोई इलाह | दूसरा | नहीं कोई इलाह (बरहक़) | मगर | वो ही | हर | चीज़ |

وقف لازم

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| هَالِكٌ | اِلَّا | وَجْهَهٗ ؕ | لَهُ | الْحُكْمُ | وَاِلَيْهِ | تُرْجَعُوْنَ ﴿88﴾ ع |
| हलाक होने वाली है | सिवाय | उसके चेहरे के | उसी के लिए है | हुक्म | और उसी की तरफ़ | तुम पलटाए जाओगे |

ع 9 6 12 الثالثة

## سُوْرَةُ الْعَنْكَبُوْتِ مَكِّيَّةٌ 85 — 29

اٰيَاتُهَا: 69 — رُكُوْعَاتُهَا: 7

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| الٓمّٓ ﴿1﴾ ج | اَحَسِبَ | النَّاسُ | اَنْ | يُّتْرَكُوْٓا | اَنْ | يَّقُوْلُوْٓا | اٰمَنَّا |
| الٓمّٓ | क्या समझ लिया है | लोगों ने | कि | वो छोड़ दिए जाऐंगे | ये कि | वो कह दें | ईमान लाए हम |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَهُمْ | لَا يُفْتَنُوْنَ ﴿2﴾ | وَلَقَدْ | فَتَنَّا | الَّذِيْنَ | مِنْ قَبْلِهِمْ |
| और वो | ना वो आज़माए जाऐंगे | और अलबत्ता तहक़ीक़ | आज़माया हमने | उनको जो | इनसे पहले थे |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| فَلَيَعْلَمَنَّ | اللّٰهُ | الَّذِيْنَ | صَدَقُوْا | وَلَيَعْلَمَنَّ | الْكٰذِبِيْنَ ﴿3﴾ |
| पस अलबत्ता ज़रूर जान लेगा | अल्लाह | उन लोगों को जिन्होंने | सच कहा | और अलबत्ता वो ज़रूर जान लेगा | झूठों को |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| يَّسْبِقُوْنَا ؕ | اَنْ | السَّيِّاٰتِ | يَعْمَلُوْنَ | الَّذِيْنَ | حَسِبَ | اَمْ |
| वो सबक़त ले जाएंगे हम पर | कि | बुरे | अमल करते हैं | उन लोगों ने जो | समझ लिया | या |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| فَاِنَّ | لِقَآءَ اللّٰهِ | يَرْجُوْا | كَانَ | مَنْ | يَحْكُمُوْنَ (4) | مَا | سَآءَ |
| तो बेशक | अल्लाह से मुलाक़ात की | उम्मीद रखता | हो | जो कोई | वो फ़ैसला कर रहे हैं | जो | कितना बुरा है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَمَنْ | الْعَلِيْمُ (5) | السَّمِيْعُ | وَهُوَ | لَاٰتٍ ؕ | اللّٰهِ | اَجَلَ |
| और जो कोई | ख़ूब जानने वाला है | ख़ूब सुनने वाला है | और वो | अलबत्ता आने वाला है | अल्लाह का | मुक़र्ररह वक़्त |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَغَنِيٌّ | اللّٰهَ | اِنَّ | لِنَفْسِهٖ ؕ | يُجَاهِدُ | فَاِنَّمَا | جَاهَدَ |
| अलबत्ता बहुत बेनियाज़ है | अल्लाह | बेशक | अपने नफ़्स के लिए | वो जिहाद करता है | तो बेशक | जिहाद करे |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| لَنُكَفِّرَنَّ | الصّٰلِحٰتِ | وَعَمِلُوا | اٰمَنُوْا | وَالَّذِيْنَ | عَنِ الْعٰلَمِيْنَ (6) |
| अलबत्ता हम ज़रूर दूर कर देंगे | नेक | और उन्होंने अमल किए | ईमान लाए | और वो जो | तमाम जहान वालों से |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| كَانُوْا | الَّذِيْ | اَحْسَنَ | وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ | سَيِّاٰتِهِمْ | عَنْهُمْ |
| थे वो | उसका जो | बेहतरीन | और अलबत्ता हम ज़रूर बदला देंगे उन्हें | बुराईयां उनकी | उनसे |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَاِنْ | حُسْنًا ؕ | بِوَالِدَيْهِ | الْاِنْسَانَ | وَوَصَّيْنَا | يَعْمَلُوْنَ (7) |
| और अगर | भलाई (करने) की | अपने वालिदैन के साथ | इंसान को | और ताकीद की हमने | वो अमल करते |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| عِلْمٌ | بِهٖ | لَكَ | لَيْسَ | مَا | بِيْ | لِتُشْرِكَ | جَاهَدٰكَ |
| कोई इल्म | जिसका | तुम्हें | नहीं है | उसको जो | मेरे साथ | ताकि तुम शरीक करो | वो दोनों ज़ोर डालें तुम पर |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| كُنْتُمْ | بِمَا | فَاُنَبِّئُكُمْ | مَرْجِعُكُمْ | اِلَيَّ | تُطِعْهُمَا ؕ | فَلَا |
| थे तुम | वो जो | तो मैं बताऊंगा तुम्हें | लौटना है तुम्हारा | मेरी ही तरफ़ | तुम इताअत करो उन दोनों की | तो ना |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| لَنُدْخِلَنَّهُمْ | الصّٰلِحٰتِ | وَعَمِلُوا | اٰمَنُوْا | وَالَّذِيْنَ | تَعْمَلُوْنَ (8) |
| अलबत्ता हम ज़रूर दाख़िल करेंगे उन्हें | नेक | और उन्होंने अमल किए | ईमान लाए | और वो जो | तुम अमल किया करते |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فِي الصّٰلِحِيْنَ ⑨ | وَمِنَ النَّاسِ | مَنْ | يَّقُوْلُ | اٰمَنَّا | بِاللّٰهِ | فَاِذَآ |
| नेक लोगों में | और लोगों में से कोई है | जो | कहता है | ईमान लाए हम | अल्लाह पर | फिर जब |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| اُوْذِيَ | فِي اللّٰهِ | جَعَلَ | فِتْنَةَ | النَّاسِ | كَعَذَابِ اللّٰهِ ؕ |
| वो अज़ीयत दिया जाता है | अल्लाह (की राह) में | वो बना लेता है | आज़माइश को | लोगों की | अल्लाह के अज़ाब की तरह |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَلَئِنْ | جَآءَ | نَصْرٌ | مِّنْ رَّبِّكَ | لَيَقُوْلُنَّ | اِنَّا | كُنَّا |
| और अलबत्ता अगर | आ गई | मदद | आपके रब की तरफ़ से | अलबत्ता वो ज़रूर कहेंगे | बेशक हम | थे हम |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مَعَكُمْ ؕ | اَوَلَيْسَ | اللّٰهُ | بِاَعْلَمَ | بِمَا | فِيْ صُدُوْرِ | الْعٰلَمِيْنَ ⑩ |
| साथ तुम्हारे | क्या भला नहीं | अल्लाह | ख़ूब जानता | उसे जो | सीनों में है | तमाम जहान वालों के |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَلَيَعْلَمَنَّ | اللّٰهُ | الَّذِيْنَ | اٰمَنُوْا | وَلَيَعْلَمَنَّ | الْمُنٰفِقِيْنَ ⑪ |
| और अलबत्ता ज़रूर जान लेगा | अल्लाह | उनको जो | ईमान लाए | और अलबत्ता वो ज़रूर जान लेगा | मुनाफ़िक़ों को |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَقَالَ | الَّذِيْنَ | كَفَرُوْا | لِلَّذِيْنَ | اٰمَنُوا | اتَّبِعُوْا | سَبِيْلَنَا |
| और कहा | उन लोगों ने जिन्होंने | कुफ़्र किया | उन लोगों से जो | ईमान लाए | पैरवी करो | हमारे रास्ते की |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَلْنَحْمِلْ | خَطٰيٰكُمْ ؕ | وَمَا | هُمْ | بِحٰمِلِيْنَ | مِنْ خَطٰيٰهُمْ |
| और हम ज़रूर उठा लेंगे | ख़ताऐं तुम्हारी | हालांकि नहीं | वो | उठाने वाले | उनकी ख़ताओं में से |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مِّنْ شَيْءٍ ؕ | اِنَّهُمْ | لَكٰذِبُوْنَ ⑫ | وَلَيَحْمِلُنَّ | اَثْقَالَهُمْ | وَاَثْقَالًا |
| कोई चीज़ | बेशक वो | अलबत्ता झूठे हैं | और अलबत्ता वो ज़रूर उठाऐंगे | बोझ अपने | और कई बोझ |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مَّعَ | اَثْقَالِهِمْ ۙ | وَلَيُسْـَٔلُنَّ | يَوْمَ | الْقِيٰمَةِ | عَمَّا | كَانُوْا |
| साथ | अपने बोझों के | और अलबत्ता वो ज़रूर पूछे जाऐंगे | दिन | क़यामत के | उस चीज़ के बारे में जो | थे वो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| يَفْتَرُوْنَ ⑬ ع | وَلَقَدْ | اَرْسَلْنَا | نُوْحًا | اِلٰى قَوْمِهٖ | فَلَبِثَ | فِيْهِمْ |
| वो गढ़ा करते | और अलबत्ता तहक़ीक़ | भेजा हमने | नूह को | तरफ़ उसकी क़ौम के | तो वो रहा | उनमें |

ع 1 13 13

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اَلْفَ | سَنَةٍ | اِلَّا | خَمْسِيْنَ | عَامًا ؕ | فَاَخَذَهُمُ | الطُّوْفَانُ | وَهُمْ |
| एक हज़ार | साल | मगर | पचास | साल (कम) | तो पकड़ लिया उन्हें | तूफ़ान ने | जब कि वो |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| ظٰلِمُوْنَ ﴿14﴾ | فَاَنْجَيْنٰهُ | وَاَصْحٰبَ السَّفِيْنَةِ | وَجَعَلْنٰهَآ | اٰيَةً |
| ज़ालिम थे | तो निजात दी हमने उसे | और कश्ती वालों को | और बना दिया हमने उसे | एक निशानी |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿15﴾ | وَاِبْرٰهِيْمَ | اِذْ | قَالَ | لِقَوْمِهِ | اعْبُدُوا | اللّٰهَ |
| तमाम जहान वालों के लिए | और इब्राहीम को | जब | उसने कहा | अपनी क़ौम से | इबादत करो | अल्लाह की |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| وَاتَّقُوْهُ ؕ | ذٰلِكُمْ | خَيْرٌ | لَّكُمْ | اِنْ | كُنْتُمْ | تَعْلَمُوْنَ ﴿16﴾ | اِنَّمَا |
| और डरो उससे | ये | बेहतर है | तुम्हारे लिए | अगर | हो तुम | तुम जानते | बेशक |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| تَعْبُدُوْنَ | مِنْ دُوْنِ | اللّٰهِ | اَوْثَانًا | وَّتَخْلُقُوْنَ | اِفْكًا ؕ | اِنَّ |
| तुम इबादत करते हो | सिवाए | अल्लाह के | कुछ बुतों की | और तुम गढ़ते हो | झूठ | बेशक |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الَّذِيْنَ | تَعْبُدُوْنَ | مِنْ دُوْنِ | اللّٰهِ | لَا يَمْلِكُوْنَ | لَكُمْ | رِزْقًا |
| वो जिन की | तुम इबादत करते हो | सिवाए | अल्लाह के | नहीं वो मालिक हो सकते | तुम्हारे लिए | रिज़्क़ के |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فَابْتَغُوْا | عِنْدَ اللّٰهِ | الرِّزْقَ | وَاعْبُدُوْهُ | وَاشْكُرُوْا | لَهٗ ؕ | اِلَيْهِ |
| पस तलाश करो | अल्लाह के पास | रिज़्क़ | और इबादत करो उसकी | और शुक्र अदा करो | उसका | तरफ़ उसी के |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| تُرْجَعُوْنَ ﴿17﴾ | وَاِنْ | تُكَذِّبُوْا | فَقَدْ | كَذَّبَ | اُمَمٌ | مِّنْ قَبْلِكُمْ ؕ |
| तुम लौटाए जाओगे | और अगर | तुम झुठलाते हो | पस तहक़ीक़ | झुठलाया | उम्मतों ने | जो तुम से पहले थीं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَمَا | عَلَى الرَّسُوْلِ | اِلَّا | الْبَلٰغُ | الْمُبِيْنُ ﴿18﴾ | اَوَلَمْ | يَرَوْا |
| और नहीं | रसूल पर | मगर | पहुंचा देना | वाज़ेह तौर पर | क्या भला नहीं | उन्होंने देखा |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| كَيْفَ | يُبْدِئُ | اللّٰهُ | الْخَلْقَ | ثُمَّ | يُعِيْدُهٗ ؕ | اِنَّ | ذٰلِكَ |
| किस तरह | इब्तिदा करता है | अल्लाह | मख़लूक़ की | फिर | फिर वो एआदा करेगा उसका | बेशक | ये |

© ALHUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| عَلَى اللّٰهِ | يَسِيْرٌ ﴿19﴾ | قُلْ | سِيْرُوْا | فِي الْاَرْضِ | فَانْظُرُوْا | كَيْفَ |
| अल्लाह पर | बहुत आसान है | कह दीजिए | चलो फिरो | ज़मीन में | फिर दखो | किस तरह |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| بَدَاَ | الْخَلْقَ | ثُمَّ | اللّٰهُ | يُنْشِئُ | النَّشْاَةَ | الْاٰخِرَةَ ؕ | اِنَّ |
| उसने इब्तिदा की | मख़लूक़ की | फिर | अल्लाह | वो उठाएगा | उठाना | आखिरी बार | बेशक |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اللّٰهَ | عَلٰى | كُلِّ | شَيْءٍ | قَدِيْرٌ ﴿20﴾ ج | يُعَذِّبُ | مَنْ | يَّشَآءُ |
| अल्लाह | ऊपर | हर | चीज़ के | ख़ूब क़ुदरत रखने वाला है | वो अज़ाब देता है | जिसे | वो चाहता है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَيَرْحَمُ | مَنْ | يَّشَآءُ ج | وَاِلَيْهِ | تُقْلَبُوْنَ ﴿21﴾ | وَمَآ | اَنْتُمْ |
| और वो रहम करता है | जिस पर | वो चाहता है | और उसी की तरफ़ | तुम लौटाए जाओगे | और नहीं | तुम |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بِمُعْجِزِيْنَ | فِي الْاَرْضِ | وَلَا | فِي السَّمَآءِ ز | وَمَا | لَكُمْ | مِّنْ دُوْنِ |
| आजिज़ करने वाले | ज़मीन में | और ना | आसमान में | और नहीं | तुम्हारे लिए | सिवाए |

ع 2 9 14

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اللّٰهِ | مِنْ وَّلِيٍّ | وَّلَا | نَصِيْرٍ ﴿22﴾ ع | وَالَّذِيْنَ | كَفَرُوْا | بِاٰيٰتِ اللّٰهِ |
| अल्लाह के | कोई दोस्त | और ना | कोई मददगार | और वो जिन्होंने | कुफ़्र किया | अल्लाह की आयात का |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَلِقَآئِهٖٓ | اُولٰٓئِكَ | يَئِسُوْا | مِنْ رَّحْمَتِيْ | وَاُولٰٓئِكَ | لَهُمْ | عَذَابٌ |
| और उसकी मुलाक़ात का | यही लोग हैं | जो मायूस हो गए | मेरी रहमत से | और यही लोग हैं | उनके लिए | अज़ाब है |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اَلِيْمٌ ﴿23﴾ | فَمَا | كَانَ | جَوَابَ | قَوْمِهٖٓ | اِلَّآ | اَنْ | قَالُوا |
| दर्दनाक | तो ना | था | जवाब | उसकी क़ौम का | मगर | ये कि | उन्होंने कहा |

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اقْتُلُوْهُ | اَوْ | حَرِّقُوْهُ | فَاَنْجٰىهُ | اللّٰهُ | مِنَ النَّارِ ؕ | اِنَّ | فِيْ ذٰلِكَ |
| क़त्ल कर दो उसे | या | जला डालो उसे | तो निजात दी उसे | अल्लाह ने | आग से | बेशक | इसमें |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| لَاٰيٰتٍ | لِّقَوْمٍ | يُّؤْمِنُوْنَ ﴿24﴾ | وَقَالَ | اِنَّمَا | اتَّخَذْتُمْ |
| अलबत्ता निशानियां हैं | उन लोगों के लिए | जो ईमान लाते हैं | और उसने कहा | बेशक | बना लिया तुमने |

AL-QURAN INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| مِّنْ دُوْنِ | اللّٰهِ | اَوْثَانًا ۙ | مَّوَدَّةَ | بَيْنِكُمْ | فِي الْحَيٰوةِ | الدُّنْيَا ۚ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| सिवाए | अल्लाह के | बुतों को | मोहब्बत का ज़रिया | आपस में | ज़िंदगी में | दुनिया की |

| ثُمَّ | يَوْمَ | الْقِيٰمَةِ | يَكْفُرُ | بَعْضُكُمْ | بِبَعْضٍ | وَّيَلْعَنُ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| फिर | दिन | क़यामत के | इंकार करेगा | बाज़ तुम्हारा | बाज़ का | और लाअनत करेगा |

| بَعْضُكُمْ | بَعْضًا ۡ | وَّمَاْوٰىكُمُ | النَّارُ | وَمَا | لَكُمْ | مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿25﴾ ۖۙ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बाज़ तुम्हारा | बाज़ को | और ठिकाना तुम्हारा | आग है | और नहीं | तुम्हारे लिए | कोई मददगार |

وقف لازم

| فَاٰمَنَ | لَهٗ | لُوْطٌ ۘ | وَقَالَ | اِنِّيْ | مُهَاجِرٌ | اِلٰى رَبِّيْ ؕ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| तो ईमान लाया | उस पर | लूत | और उसने कहा | बेशक मैं | हिजरत करने वाला हूं | तरफ़ अपने रब के |

| اِنَّهٗ | هُوَ | الْعَزِيْزُ | الْحَكِيْمُ ﴿26﴾ | وَوَهَبْنَا | لَهٗۤ | اِسْحٰقَ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| बेशक वो | वो ही है | बहुत ज़बरदस्त | ख़ूब हिकमत वाला | और अता कर दिया हमने | उसे | इसहाक़ |

| وَيَعْقُوْبَ | وَجَعَلْنَا | فِيْ ذُرِّيَّتِهِ | النُّبُوَّةَ | وَالْكِتٰبَ | وَاٰتَيْنٰهُ |
|---|---|---|---|---|---|
| और याक़ूब | और रख दी हमने | उसकी औलाद में | नुबूव्वत | और किताब | और अता किया हमने उसे |

| اَجْرَهٗ | فِي الدُّنْيَا ۚ | وَاِنَّهٗ | فِي الْاٰخِرَةِ | لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿27﴾ | وَلُوْطًا |
|---|---|---|---|---|---|
| अज्र उसका | दुनिया में | और बेशक वो | आख़िरत में | अलबत्ता सालेह लोगों में से है | और लूत को |

| اِذْ | قَالَ | لِقَوْمِهٖۤ | اِنَّكُمْ | لَتَاْتُوْنَ | الْفَاحِشَةَ ۡ | مَا | سَبَقَكُمْ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जब | उसने कहा | अपनी क़ौम से | बेशक तुम | अलबत्ता तुम आते हो | बेहयाई को | नहीं | सबक़त की तुम पर |

| بِهَا | مِنْ اَحَدٍ | مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿28﴾ | اَئِنَّكُمْ | لَتَاْتُوْنَ | الرِّجَالَ |
|---|---|---|---|---|---|
| साथ इसके | किसी एक ने | तमाम जहान वालों में से | क्या बेशक तुम | अलबत्ता तुम आते हो | मर्दों को |

| وَتَقْطَعُوْنَ | السَّبِيْلَ ۙ | وَتَاْتُوْنَ | فِيْ نَادِيْكُمُ | الْمُنْكَرَ ؕ | فَمَا | كَانَ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और तुम काटते हो | रास्ता | और तुम आते हो | अपनी मजलिसों में | बुरे कामों को | तो ना | था |

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| اللّٰهِ | بِعَذَابِ | ائْتِنَا | قَالُوا | اَنْ | اِلَّآ | قَوْمِهٖٓ | جَوَابَ |
| अल्लाह का | अज़ाब | ले आ हम पर | उन्होंने कहा | ये कि | मगर | उसकी क़ौम का | जवाब |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| عَلٰى | انْصُرْنِيْ | رَبِّ | قَالَ | مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿29﴾ | كُنْتَ | اِنْ |
| ऊपर | मदद फ़रमा मेरी | ऐ मेरे रब | कहा | सच्चों में से | है तू | अगर |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| اِبْرٰهِيْمَ | رُسُلُنَآ | جَآءَتْ | وَلَمَّا | الْمُفْسِدِيْنَ ﴿30﴾ ع | الْقَوْمِ |
| इब्राहीम के पास | हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) | आए | और जब | जो मुफ़सिद हैं | उन लोगों के |

ع 3 8 15

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| الْقَرْيَةِ ج | هٰذِهِ | اَهْلِ | مُهْلِكُوْٓا | اِنَّا | قَالُوْٓا | بِالْبُشْرٰى لا |
| बस्ती के | इस | रहने वालों को | हलाक करने वाले हैं | बेशक हम | उन्होंने कहा | खुशख़बरी लेकर |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| فِيْهَا | اِنَّ | قَالَ | ظٰلِمِيْنَ ﴿31﴾ ج | كَانُوْا | اَهْلَهَا | اِنَّ |
| इसमें | बेशक | इब्राहीम ने कहा | ज़ालिम | हैं वो | इसके रहने वाले | बेशक |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| لَنُنَجِّيَنَّهٗ | فِيْهَا وقفة | بِمَنْ | اَعْلَمُ | نَحْنُ | قَالُوْا | لُوْطًا ط |
| अलबत्ता हम ज़रूर निजात देंगे उसे | इसमें है | उसे जो | ज़्यादा जानते हैं | हम | उन्होंने कहा | लूत है |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اَنْ | وَلَمَّآ | مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿32﴾ | كَانَتْ | امْرَاَتَهٗ ق | اِلَّآ | وَاَهْلَهٗٓ |
| ये कि | और जब | पीछे रहने वालों में से | है वो | उसकी बीवी के | सिवाए | और उसके घर वालों को |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| بِهِمْ | وَضَاقَ | بِهِمْ | سِيْٓءَ | لُوْطًا | رُسُلُنَا | جَآءَتْ |
| उनसे | और वो तंग हुआ | उनसे | वो परेशान हुआ | लूत के पास | हमारे भेजे हुए (फ़रिश्ते) | आ गए |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مُنَجُّوْكَ | اِنَّا | تَحْزَنْ قف | وَلَا | لَا تَخَفْ | وَّقَالُوْا | ذَرْعًا |
| निजात देने वाले हैं तुझे | बेशक हम | तुम ग़म करो | और ना | ना तुम डरो | और उन्होंने कहा | दिल में |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| اِنَّا | مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ﴿33﴾ | كَانَتْ | امْرَاَتَكَ | اِلَّآ | وَاَهْلَكَ |
| बेशक हम | पीछे रहने वालों में से | है वो | तेरी बीवी के | सिवाए | और तेरे घर वालों को |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| مِّنَ السَّمَآءِ | رِجۡزًا | الۡقَرۡيَةِ | هٰذِهِ | اَهۡلِ | عَلٰۤى | مُنۡزِلُوۡنَ |
| आसमान से | एक अज़ाब | बस्ती के | इस | रहने वालों के | ऊपर | नाज़िल करने वाले हैं |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| اٰيَةًۢ | مِنۡهَاۤ | تَّرَكۡنَا | وَلَقَدۡ | يَفۡسُقُوۡنَ ﴿34﴾ | كَانُوۡا | بِمَا |
| एक निशानी | इसमें | छोड़ दी हमने | और अलबत्ता तहक़ीक़ | वो नाफ़रमानी करते | थे वो | बवजह उसके जो |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| شُعَيۡبًا ۙ | اَخَاهُمۡ | مَدۡيَنَ | وَاِلٰى | يَّعۡقِلُوۡنَ ﴿35﴾ | لِّقَوۡمٍ | بَيِّنَةً |
| शुऐब को (भेजा) | उनके भाई | मदयन के | और तरफ़ | जो अक़्ल रखते हैं | उन लोगों के लिए | खुली |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| وَلَا | الۡيَوۡمَ الۡاٰخِرَ | وَارۡجُوا | اللّٰهَ | اعۡبُدُوا | يٰقَوۡمِ | فَقَالَ |
| और ना | आख़िरी दिन की | और उम्मीद रखो | अल्लाह की | इबादत करो | ऐ मेरी क़ौम | तो उसने कहा |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| الرَّجۡفَةُ | فَاَخَذَتۡهُمُ | فَكَذَّبُوۡهُ | مُفۡسِدِيۡنَ ﴿36﴾ | فِى الۡاَرۡضِ | تَعۡثَوۡا |
| एक ज़लज़ले ने | तो पकड़ लिया उन्हें | तो उन्होंने झुठला दिया उसे | मुफ़सिद बन कर | ज़मीन में | तुम फ़साद करो |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| وَقَدۡ | وَّثَمُوۡدَا۟ | وَعَادًا | جٰثِمِيۡنَ ﴿37﴾ ۙ | فِىۡ دَارِهِمۡ | فَاَصۡبَحُوۡا |
| और तहक़ीक़ | और समूद को (हलाक किया) | और आद | घुटनों के बल गिरने वाले | अपने घरों में | तो सुबह की उन्होंने |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| الشَّيۡطٰنُ | لَهُمُ | وَزَيَّنَ | مِّنۡ مَّسٰكِنِهِمۡ قف | لَـكُمۡ | تَّبَيَّنَ |
| शैतान ने | उनके लिए | और मुज़य्यन कर दिए | उनके घरों से | तुम पर | वाज़ेह हो गई (हालत) |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| مُسۡتَبۡصِرِيۡنَ ﴿38﴾ ۙ | وَكَانُوۡا | عَنِ السَّبِيۡلِ | فَصَدَّهُمۡ | اَعۡمَالَهُمۡ |
| बहुत देखने वाले/समझदार | और थे वो | रास्ते से | तो उसने रोक दिया उन्हें | आमाल उनके |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| مُّوۡسٰى | جَآءَهُمۡ | وَلَقَدۡ | وَهَامٰنَ قف | وَفِرۡعَوۡنَ | وَقَارُوۡنَ |
| मूसा | आए उनके पास | और अलबत्ता तहक़ीक़ | और हामान | और फ़िरऔन | और क़ारून |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| سٰبِقِيۡنَ ﴿39﴾ ۚ | كَانُوۡا | وَمَا | فِى الۡاَرۡضِ | فَاسۡتَكۡبَرُوۡا | بِالۡبَيِّنٰتِ |
| भाग जाने वाले (हमसे) | थे वो | और ना | ज़मीन में | तो उन्होंने तकब्बुर किया | साथ वाज़ेह निशानियों के |

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

| عَلَيْهِ | اَرْسَلْنَا | مَّنْ | فَمِنْهُمْ | بِذَنْۢبِهٖ ج | اَخَذْنَا | فَكُلًّا |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जिस पर | भेजी हमने | जो | तो उनमें से कोई है | बवजह उसके गुनाह के | पकड़ लिया हमने | तो हर एक को |

| مَّنْ | وَمِنْهُمْ | الصَّيْحَةُ ج | اَخَذَتْهُ | مَّنْ | وَمِنْهُمْ | حَاصِبًا ج |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जो | और उनमें से कोई है | चिंघाड़ ने | पकड़ लिया उसको | जो | और उनमें से कोई है | पत्थरों की आंधी |

| وَمَا | اَغْرَقْنَا ج | مَّنْ | وَمِنْهُمْ | الْاَرْضَ ج | بِهِ | خَسَفْنَا |
|---|---|---|---|---|---|---|
| और नहीं | ग़र्क़ कर दिया हमने | जिसे | और उनमें से कोई है | ज़मीन को | साथ उसके | धंसा दिया हमने |

| يَظْلِمُوْنَ (40) | اَنْفُسَهُمْ | كَانُوْٓا | وَلٰكِنْ | لِيَظْلِمَهُمْ | اللّٰهُ | كَانَ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| वो ज़ुल्म करते | अपनी ही जानों पर | थे वो | और लेकिन | कि वो ज़ुल्म करे उन पर | अल्लाह | है |

| كَمَثَلِ | اَوْلِيَآءَ | اللّٰهِ | مِنْ دُوْنِ | اتَّخَذُوْا | الَّذِيْنَ | مَثَلُ |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मानिंद मिसाल | कुछ वली/दोस्त | अल्लाह के | सिवाए | बना लिए | उनकी जिन्होंने | मिसाल |

| لَبَيْتُ | الْبُيُوْتِ | اَوْهَنَ | وَاِنَّ | بَيْتًا ط | اِتَّخَذَتْ | الْعَنْكَبُوْتِ ج |
|---|---|---|---|---|---|---|
| अलबत्ता घर है | घरों में | सबसे कमज़ोर | और बेशक | एक घर | जिसने बना लिया | एक मकड़ी के है |

| مَا | يَعْلَمُ | اللّٰهَ | اِنَّ | يَعْلَمُوْنَ (41) | كَانُوْا | لَوْ | الْعَنْكَبُوْتِ م |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| जिसे | वो जानता है | अल्लाह | बेशक | वो इल्म रखते | होते वो | काश कि | मकड़ी का |

وقف لازم

| الْحَكِيْمُ (42) | الْعَزِيْزُ | وَهُوَ | مِنْ شَيْءٍ ط | مِنْ دُوْنِهٖ | يَدْعُوْنَ |
|---|---|---|---|---|---|
| ख़ूब हिक्मत वाला | बहुत ज़बरदस्त | और वो ही है | किसी भी चीज़ को | उसके सिवा | वो पुकारते हैं |

| يَعْقِلُهَآ | وَمَا | لِلنَّاسِ ج | نَضْرِبُهَا | الْاَمْثَالُ | وَتِلْكَ |
|---|---|---|---|---|---|
| समझते उन्हें | और नहीं | लोगों के लिए | हम बयान करते हैं उन्हें | मिसालें हैं | और ये |

| وَالْاَرْضَ | السَّمٰوٰتِ | اللّٰهُ | خَلَقَ | الْعٰلِمُوْنَ (43) | اِلَّا |
|---|---|---|---|---|---|
| और ज़मीन को | आसमानों | अल्लाह ने | पैदा किया | इल्म रखने वाले | मगर |

AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION

ع 4 14 16

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| بِالْحَقِّ ؕ | اِنَّ | فِيْ ذٰلِكَ | لَاٰيَةً | لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿44﴾ ع |
| साथ हक़ के | यक़ीनन | इसमें | अलबत्ता एक निशानी है | ईमान लाने वालों के लिए |

© AL-HUDA INTERNATIONAL WELFARE FOUNDATION